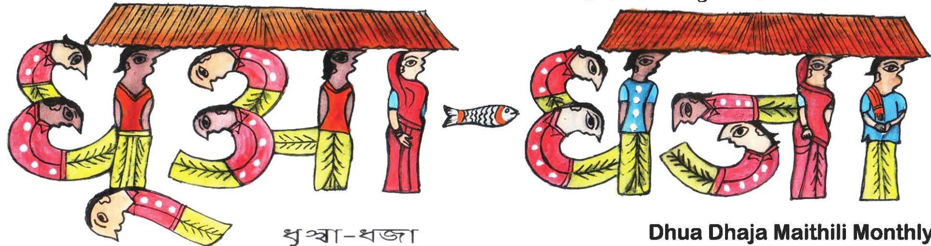
वर्ष ६, अंक २, आसिन २०७३

भाषा-साहित्य कला-संस्कृति संवाहक मैथिली मासिक



Dhua Dhaja Maithili Monthly

खिस्सा पेहानी अंक

बालकथा/खिस्सा-पेहानीक प्रभाव प्रभुत्व

धीयापूताके बाल लोककथा/खिस्सा-पेहानी बड़ नीक लगैत छन्हि । रोचकता आ आनन्दक भरपूर समावेसिता एहिमे रहने किछु बच्चा त' बिनु खिस्सा सुनने रातिमे कल नहि पड़ैत अछि । बड़, बूढ़ा-बूढ़ी, दादा-दादी, नाना-नानी, माय-बाप, खिस्सकर आदिक कहल खिस्सा बच्चाके मानसिक तृप्ति प्रदान करैत अछि । खिस्सा सुनैत काल बच्चा अपन कल्पना ओ वोधशक्तिक बले ओहिमे तादात्मकता स्थापित कएलैत अछि । ओ ओहि खिस्साक हर्ष, दुखक अंग बनि जाइत अछि । खिस्साक सद्भात्र ओकरा मनमे सहानुभूति उत्पन्न करैछ त' दुष्ट पात्र प्रति रोष । एहि तरहें ई सामाजिक रूपस' सत्यके ग्रहण आ असत्यके त्यागक संस्कार ग्रहण करैत अछि । समाजशास्त्रीय दृष्टिस' कथा आ साहित्यके ई बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि अछि ।

खिस्सा-पेहानीक माध्यमस' बालक अपन जीवनक अनुभवके आओर समृद्ध कए लैत अछि । अन्तोअंत धरि खिस्सा वहिर्जगतक घटनेपर आधारित होइत अछि । बालकक जीवन स्वयंमे अधिक व्यापक नहि होइछ । एहिके माध्यमस' ओ अज्ञात तथ्य आ अनुभूत भाव सभस' साक्षात् करैत अछि । बालकक बाल्यावस्थाक वर्ष खेल-कूद, आश्चर्य, जिज्ञासा आ अनुमानक वर्ष होइत अछि । बालकक क्रियाशीलता आ विकासमान मन एहि वर्णके अनुभवके समृद्ध करएमे जतेक सामग्री नीक पुस्तकस' प्राप्त कए सकैछ ओतेक अन्यत्रस' नहि ।

धीयापूता खेलप्रेमी होइत अछि आ आनन्द ओकर केन्द्रमे रहैछ । खिस्सा-पेहानी ओकरा मनोरंजनेटा नहि द' जीवनक सीख आ अनुभूतिक विस्तारित भावभूमि प्रदान करैछ । कथाक शैलीमे इतिहास, भूगोल, विज्ञान सन उसठ आ उबाउ विषयके जानकारी सेहो आब रोचक ढंगस', वैज्ञानिक रूपस' द' रहल अछि । कहियोकाल ओकरा सभके साक्षतीकरण एहन-एहन मूल्य ओ चेतनास' होइत अछि जे आत्मप्रकाश रूपमे, विष्फोटक ढंगस' ओकर जीवनमे परिवर्त्तन आनि दैछ, व्यक्तित्वक चेतनाके समृद्ध ओ अमिट बना नव आयाम प्रदान करैत अछि । जीवन जगतक सम्पूर्णता, समाज-संस्कृतिक मूल्य-मान्यता, आदर्श ओ परम्पराके मानवता, व्यवहार कुशलता आ शिक्षास' जोड़ि आदर्श एवं निर्णय क्षमताबला व्यक्तित्क रूपमे सेहो प्रतिष्ठापित करैत अछि ।

डा. श्रीप्रसाद

हिन्दी साहित्य की रूपरेखा, लोक भारती प्रकाशन

इलाहावाद, १९८५ ई.

वर्ष – ६, अंक – २
२०७३ असिन

प्रकाशक:
कुमार भास्कर

सम्पादक:
परमेश्वर कापड़ि

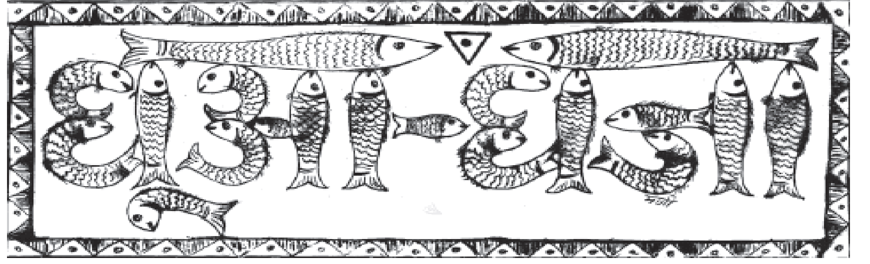
डिजाइन / लेआउट
संवाद मिडिया डेस्क

कार्यालय
जनकपुरधाम-१६, पुलचौक
फोन नं.: ०४१-५२४९५२
मो.नं. : ९८४४०२२५९४
ईमेल :
dhuadhaja@yahoo.com

सम्पर्क कार्यालय:
संवाद मिडिया
माइतीघर, काठमाण्डू
फोन नं. ०१ २२३३५५४

मुद्रण:
त्रिदेव अफसेट प्रेस
जनकपुरधाम

मूल्य– रु. २० /-



सम्पादकीय

सब गुणके आगर अपन खिस्सा-पेहानी

खाय-खेलायके सङे धीयापूताके खिस्सा-पेहानी सुनिक' आनन्दित हुअ'मे बड मजा लगैत छैक । बाल लोकसाहित्य मध्य मैथिली लोककथा/खिस्सा-पेहानीक अद्‌भूत अनुपम ओ मनोरम भण्डार अछि। इएह कारण अछि जे बालगीतक बाद खिस्सा-पेहानी बालसंसारमे सबस' पसिन्नक रसगर मनभावन साहित्यिक विधा अछि। ब्रह्मानन्द, पूर्णानन्द, सम्पूर्णानन्द, भोगानन्द, साहित्यानन्द सन-सन अनेकानेक आनन्द विश्व विदित अछि मुदा बाल-बच्चाके वास्ते शुद्ध सुपुक्क अपन निजगुत मनभावन मुदा सहज आनन्द अछि– खेलानन्द । एहि बाल-आनन्दक एकटा महत्वपूर्ण हिस्सा अछि, खिस्सा-पेहानीक । अकूत अनुपम अनमोल खिस्सा-पेहानी अधिकतर मौखिक रुपमे परम्परित रहल अछि। समय-सन्दर्भ आ एकल पारिवारिक व्यवस्थाक रुपमे समाजमे वदलाव अएने, बालबच्चाके दादा-दादी, नाना-नानीक संसर्ग घटने-छुटने, ओहूमे स्कूली शिक्षाक बोझ आ रुटिन तथा होमवर्कक धसना-चेपामे पिचएने, ओसब खिस्सा-पेहानीक लेल लल, बिलटल ओ निसोहर भेल अछि। आजुक युग संचारक युग अछि आ आनन्दक एहि खास खजानाके नवका पिढीक बालबच्चामे हस्तान्तरित करबाक सबस' बढिञा, भरोसगर स्रोत-साधन ओ उपाय आमसंचार रहल अछि।

'बाबाके बखारी आ धीयाके उपास' बला हाल आजुक धीयापुताके अछि । जहिना कोठी बखारीमे नवका पुरना चाउर गजल अमार लागल रहतै, तैं कि, जाबे ओकरा रिन्हतै, पकएतै नै, ताबे खएतै केना ? ओहिना बड-बड बेजोर मनभावन खिस्सा-पेहानीसब ओहिना अनेरे किछु लोककंठमे, किछु एमहर-ओमहर हेराएल छिड़ियाएल बेबाइल भेल रहतै, तैस' त' बाल-बच्चाके कोनो सोकाज नइ लगतै। एहि सब बात-व्यवस्थाके लेखि परेखि 'विश्व बाल समाज– विश्वास', जनकपुरधाम प्रकाशन आ वितरणके, संरक्षण आ संवर्द्धनके वास्ते धूआधजा सङ सहकार्य कए ई अंक खिस्सा-पेहानीक अंकक रुपमे प्रकाशित कएल अछि।

भाषिक तरलता ओ भाषा-राजनीतिक विकट उठाडोरि अन्तरिम कालमे, लोकभाषा आ मानक मैथिलीक खिचातानीमे, एहि अंकक खिस्सकर परमेश्वर कापड़िक लिखल मैथिली खिस्सा-पेहानी बालसमाजमे बाललोकभाषा, बाललोककथा आ लोकजीवन दर्शनस' साक्षातीकरण किछुओ कए, हर्ष-आनन्दस' सराबोर करतै, कथकहीक लेख्य गुणके धस, चसक धरा, नवतुरके महिमा मण्डित करैत, साहित्यक अनुपम रसगर भण्डारके भरतै, सहए नहि, ओकर ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा-दीक्षा, वोध आ चेतनाक क्षितिज ओ परिधिके निस्सन आ विस्तारित करैत, अपन समाज आ संस्कृतिक प्रतिक आवेग आ सोन्हगर मोहके सेहो अवश्य मजगुत करतै, इहो विश्वास अपना ठामपर सुदृढ अछि।

बगीया आ चरबहबा

एहिना कोनो गाम-घरमे एगो छौड़ा रहए । उ टुगर-टापर रहए । ओकरा केउ कतौ, कोनो अहरिया-ठहरिया नै रहइ । गरीब-गुरबा रहने, ओकरा खाय-पिय'के कोनो आय उपाय नै रहए । से उ टेलगर जे भेल त' गैबारी कर' लागल । भरि गामके उ गाइ चराबए, आ ओइ सांतीमे जे ओकरा लोक हथउठाइ पारी दै, तहीपर उ गुजर-बसर करए ।

ओकरा कहियो केउ बसिया-खोसिया भात-रोटी दए । केउ भुजा-भरी दए । केउ कथू, त' केउ कथू ओकरा दए । सेहे खा क', उ अपन दिन- समय खेपए ।

अहिना एक दिन, एकगोटे ओकरा एगो बगीया देलक ।

उ संजोगना, ओइ बगीयाके उ नै खा'क', आगरिम दिन ला', ओकरा लेने-लेने एकटाम रोपलक । आ रोपिक' ओइ बगीयाके कहलक– रे बगीया, रे बगीया ! जनमबे त' जनम, नै त' तोरा काइट-कुइट क' फेक देबौ ।

आब ओकरा मुह रहै नै, से किछु बाजओ, नेहोरा मिनती करओ । हाथ रहै नै, जे लड़ओ-भिरओ, अपनाके बचाबओ । टांङ रहै नै जे ओत्तस' जान बचा क', केहुना कत्तौ भागओ ।

से डरे, छुलकले उ बगीया जनैम गेल ।

से देखिक', गैबरबाके बड मन खुश भेल । तिरपित नेहाल मनमे उमेद जगलै । मने-मने गुंड़चाउर फांक' लागल । से, उ लगले बगीयाके कहलक– रे बगीया, रे बगीया ! बढ़बे त' ब'ढ़, नै त' तोरा काइट-कुइटि क' फेक देबौ ।

मरता कि नै करता ?

से, डरे उ बगीया बैढ़ गेल । बैढ़क' झमटगर भ' गेल । से देखिक' गदगद होइत, उ गैबरबा छड़ा बगीयाके धमकबैत बाजल – रे बगीया, रे बगीया ! फुलएबे त' फुलो, नै त' हे देख, अखनते तोरा हम काइट-खुइटक' फेक देबौ ।

आब उ बगीया डरे, लगले लदबद फुला गेल ।

– रे बगीया, रे बगीया फरबे त' फ'र, नै त' हे देख ! तोरा कुइट-कुइट क' फेक देबौ ।

उ बगीया लदफद फैर गेल ।

– रे बगीया, रे बगीया ! जुअएबे त' जुओ, नै त' काइट-कुइट क' फेकि देबौ ।

आब त' बगीया जुआक', याहयाके भ' गेल ।

– रे बगीया, रे बगीया पकबे त' पाक, नै त' काइट-कुइट क' फेक देबौ ।

एह, बाउ हौ बाउ ! दैव रे दैव ! आब ला न' । सौंसे गाछके बगीया लाले-पिरे निमने नाहित पाकि गेल ।

तिरपित नेहाल गैबरबा चट द' गाछपर चढ़ल आ मनस' बगीया तोरि-तोरि खाए लागल ।

खन एमहरस' खाय, खन ओमहरस' तोरिक' चिखे । सब नीके रहै । से खाय-खाय, कि निताराए । नितरा-निताराक' खाय । ओकर डहल जरल मन हरियर-कंचन भ' गेल ।

ओकरा होइक जे पेटदुखी आब सब दिन ला' निंघटल ।

आब त' ओकरा खायके कोनो कमी नै रहलै । ओकर दिने घुमि गेलै । ओकरा लोकस' माङ-चाङके कोनो बाते नै रैह गेल्लै ।

तही घड़ीमे लौकिया लागल, एगो ठकनी बुढ़िया आएल । अबिते आएलआ लागल ओकरा मुलकनके नेहोरा कर'– रे बौआ ! बूढ़-ठेर छी ! गरीब-गुरबा, दीन-दुखियारीन छी । भुखके दुख तोरास' बेसी आन के बुझतै ? कए सांझके भुखल-पियासल छी । भुखे रहल नै होइहबे । से हे, एगो, दूगो बगीया दे, खाउ !

– कथीके से ? नै हम जो । कोन सांतीम, हम तोरा बगीया दियौ ?

– आ दुर पदना, बोङकटा ! रे, भूखल-दुखल छी । बूढ़-ठेर छी । बुढ़िया चरबहबाके पटियाबे – से, द' दे बौआ । एगो बगीया दे ।

उ मयारु रहए । से ओकरा दया लागि गेलै । बड जे बुढिया निहोरा कएलक, त' पसिझक', उ छौड़ा बुढ़ियाके एगो बगीया तोड़िक', दिअ' प' वृत भ' गेल, आ बुढ़ियाके कहलक – ले बगीया ! कथीमे लेबे, से ले ।

बुढ़िया खेलल-खेलारि रहए । बड भारी ठकनी त' रहबे करे । आब त' उ लागल बातके भरियाब' ।

ई बात उ छड़ा बुझे नै बुझे । ओम्हर उ लटारहम, भाभट ध'क' बाजे – रे बौआ ! कथीमे देबे, से तोंही क'ह ।

– हाथमे ले । छौड़ा कहलक ।

– हाथपर देब, त' हथाइने भ' जायत । बुढ़िया बातके बढाबे ।

– त' खोंइछामे ले !

– खोंइछामे देबे, त' खोंइछाइन भ' जायत । आब ला', बुढ़िया लपौरी लटारहम पसार' लागल –

... अंचरामे देबे, अंचराइन भ' जाएत ।

.... मुहमे देबे, मुहाइन भ जायत ।

..... मत्थापर देबे मथाइन भ' जायत ।

.... गोरपर देबे, गोराइन भड जायत ।

.... देहपर देबे, देहाइन भ' जायत ।

.... तरहत्थीपर देबे, तरहत्थाइन भ' जायत ।

.... केशपर देब, केशाइन भ' जायत ।

.... दाँतपर देबे, दँताइन भ' जायत ।

निमन नाहित औंगताइत, खौंझाइत छौड़ा तैपर ओकरा डपटलक

– गे त' तों जैपर लेबे, सेहाइने भ' जएतौ, त' तैस' तों लेब्बे नै क'र ?

नै रे बेटा ! रे बौआ, रे बौआ । रै, एना नै क'ह, रे बेटा ! बुढ़िया भभटिनियां लागल भाभटपर भाभट ध'र'– रे, सुन रे दुलरुआ । से नै, त' हम जेना कहैछियौ, त्रो तेना क'र । तों हमरा लपैक क' दे , हम झपैट क' बगीया ल' लेब ।

छौड़ा ओहिना कएलक ।

आहि रे बा ! दैबा रे दैबा । जखैन ते जे उ बगीया तोड़िक', ओकरा लपैक क' दिय' ला' जे निचा आबि नमर'लै ! मनुसमारि

ठकिनियाँ बुढ़िया, ओकरा लपैक क', हब्बर-दोब्बर बढ़का धोकरामे ध' लेलक । आउ चलल अपन घरक' ।

आब त' उ कतबो कछमछाए, छटपटाए, ओकरा त' ओइमेस' निकल' के कोनो गँओ नै भेटे ।

से उ कएलक की, त' हारिक', मन मारिक' बैठल रहल । बोरेमे स' बाट ताक' लागल, जे देखी ई हड़संघरी, भुसबैठी बुढ़िया हमरा की करैहबे ।

जाइत-जाइत खुम बड़ी दूर जे गेल, त' बुढ़ियाके पियास लागल । भुखे-पियासे ओकर मन माहुर भ' गेलै ।

से उ कएलक की, त' उ एगो पोखरी मोहारपर गेल । ओत्त' एगो खुब झंखार पिपरके गाछ रहए । ओहि त'रमे बोरा सुदहे ओकरा ओत्त रखलक, आ अपने बुढ़िया गेल पोखैरमे मुह-हाथ धोक', पाइन पिअ' ।

जाबे जे उ ओमहर गेल, चरफरमे चरबहबा ओइ बोरामे स' कोनो धरानिए निकलि गेल । निकैल क' ओइ बोरामे काँट-कुश, ढेला-चेपा सब ध'क', बोराके मुँह बान्हिक', ओत्त' स' नुका क', भागि गेल ।

बुढ़िया ओइ बोराके उठाक' पिठीपर जे बोकलक, त' ओकरा बोरा हल्लुक लगलै । तैस' उ छगुनाए– मर, तखैनता उ मुलकन भारी छलै आ अखैनता उ एत्ते हल्लुक केना भ' गेल ?

बुढ़िया जे बाट चलए, त' ओकरा बोरामेके काँट-कुश ढेपा-चेपा जे गरए, त' ओकरा गरियाबे- बोड मरना-बेटा ! तों हमरा बिठुआ कटैछे ? काँट गरबैछे, काँट ? कनी हमरा घरे त' जाय दे, तब देखिहे, हम तोरा की करैछीयौ ! एकर सबटा ओलि तोरास' केना सधबैछियौ ।

घामे-पसिने तर-तराएल जब जे उ अपना घरे पुडल, त' धाँय द' मथापर स' बोरा पटकलक ।

पटकिते अपना बेटीके मनगरे मुहे कहलक– बेटी गै, से तों ऐ बोरामेके छड़ाके, माउस बनाक' रिन्ह । हम ताबे पोखरिमेस' नेहएने अबैछी । तब दुनू माइ-बेटी कुटुर-मुटुरक' एकरा मनस' खाएब !

ई कहिक' बुढ़िया जे ओम्हर गेल आ हपसिक' छौंड़िया बोरा जे खोललक, त' देखलक ओइमे भरि बोरा काँट-कुश, ढेला-चेपा ।

छड़ा त' रहए ओइमेस' निपत्ता । मनगैर बुढ़िया लुलुआक' मुरछा गेल । पित्ते तै घडी कतनो छटपटाएल, गारि-बात देलक, से उ सबटा अपने सुनलक ।

हराशंखी बुढ़िया रहए, बड लोभी । मुनख खौकी के लोभ कथीके ? त' छड़ाके माउस खायके । आउर कथीके ? त' बगीयाके गाछ हफनियाब' दफनियाब'के ! बैठल, बिनु कमएने, मजामारि खाएके ।

से चसकल परिकल फेरु गेल ओइ चरबहबा लग आ लागल खेखनियाँपर खेखनियाँ कर'– रे बौआ रै, हे बाउ नै, सुगा नै । हे हमर मैना नै । झूठेके नेप चुआक' घेओना पसारि-पसारि भाभटपर भाभट ध'ध' क' ओकरा पसिझा फुसलाक' बगीया माङ लागल ।

डहकल ठकाएल छौड़ अपने रहे ओकरास' अदकल, हरकल । से ओकरा बोलीके ठोली मारैत, कहलक– गै की गै, कौल्हकी बुढ़िया तोंही छे ? काल्हि हम तोरा केना देलियौ बगीया आ तों केना हमरा बोरामे कसिक' ल' भागल रहए, माउस खाय ला' !

आब लागल बुढ़िया एक्के टाङपर नाचि-नाचिक' ओकरा पतियाब' पतियाब'स' बेसी भरमाक' फुसलाब' - रे बौआ रे बौआ । रे हमर आँखि ठेहुन बैठ जाय ! कोढ़ि कुष्ठि फुटिक' याह-याहके पिलुआ सौंसे देह सह-सह तेकरा कर' लागे । हम नै रे बौआ । रे हमर बाउ नै, दद्दा नै । रे हम जही घुरा आगि तापब, उनटे तेकरे आँर दागब । जही थरियामे खाएब तेकरे हम कोने लाजे भूर करब ? हम नै, हमरे सन दोसरे कोनो राँड़ी, मङजरौनी, कोंखि भुजौनी छलौ होइत । हम नै रे हमर बाउ ! हम नै, उ केउ और लागी । से नै त' तों हमरापर दया-मया क'र आ दूगो बगीया ऐ दुखिया भुखिया बुढ़ियाके द', धरम क'र ।

एक त' कल्हुका डहकल, ठहकल आ दोसरमे उ बुढ़ियाके नीकस' चिन्ह परेखि लेने रहए से उ कतबो भाभट पसारे, कानए खिंझए, उ ओकरा मनमे ढुकबे नै करए ।

एमहर बुढ़ियो रहए बर'रुप्पी, सतखेलिया । नखरा काट' भाभट पसारिक', बातेमे हुलबुलाक' ठकि लेब' बाली ।

एमहर ई अपना बातके थोड़-थम्ह लाग' देब'बाली ? उ ओमहर ऐ मनुसमरी सतखेलियाके झाँसा झौलीमे नइ पड़'बला ।

बड जे महजरो, बतकटौवलि भेल, त' छौड़ा मनेमन सोंचलक जे से नइ त', ऐ बुढ़ियाके सबटा ढिठइ, किरदानीके पत्ता लगाक', एकर जड़िए मूलेके साफ सुडाह, कथिला नै क' दी ? से सोचिं, मनमे बातके अँटकारिक', उ एहनसन बगय-बानि धएलक, जे बुझाइक ठीके उ बुढ़िया कौल्हकी नइ हबे ।

त' गाछेपरस' उ चरबहबा बाजल– अच्छा हो ले, कथीमे लेबे ? जैमे लेबे, से तों अपन ले ।

फेरु बुढ़िया पहिलुके राग पेघराब' लागलि–

– हाथपर देब, त हथाइने भ' जायत ।।
– त' खोंइछामे ले !
– खोंइछामे देबे, त' खोंइछाइन भ' जायत ।
... अंचरामे देब, अंचराइन भ' जाएत ।
.... मुहमे देबे, मुहाइन भ जायत ।
..... मत्थापर देबे, कथाइन भ' जायत ।
.... गोरपर देबे, गोराइन भ' जायत ।
.... देहपर देबे, देहाइन भ' जायत ।
.... तरहत्थीपर देबे, तरहत्थाइन भ' जायत ।
.... केशपर देबे, कशाइन भ' जायत ।
.... दाँतपर देबे, दँताइन भ' जायत ।
..... गालपर देवे, गलाइन भ' जाएत ।

छुछसोहाओन बातके लटारहम बुढिया कर' लागल
– से नै, त' रे बौआ, तों एना क'र । लपैक क' दे, हम झपैटक' ल' लेब ।

आब ला ! जखैनते उ छड़ा लपैकक' बगीया दिअ' लागल, बुढ़िया हांइ-हांइक' ओकरा अपन बोरामे कसलक । आ नपलक रस्ता, अपना घर क' ।

किछु बितलै, कतबो ओकरा भारी लगलै । बाटमे ओकरा भूख लगलै, पियास लगलै । तैं बुढ़िया बोराके बाटमे नै कतौ धएलक, आ नै कतौ सुस्ताएला', बिलमल ।

घरे अबिते जे आएल, त' पित्ते-खिस्से ओइ बोराके मथेपरस' पटकलक ।

ओइ बोरामेके छौड़के लागल बड चोट । कानल– बाउ हौ बाउ ! मरि गेली गै माइ !

– एतबे ? एतबेमे मरि गेले ? एक दू ऐंर स ऐंराठैत कंसी बुढिया दाँत किट-किटाक' बाजलि –जखैनता काटि-कुटिक' माउस जे बनएबौ । तब कुटुर-मुटुर क' तोरा मनस' खएबौ, तखैनता तों एकर मैहरम बुझिहे ।

फेरु बुढ़िया अपन बेटीके कहलक– हे देख ! तों ऐ छड़ के बुटी-बुटी काटि-कुटिक', एकर माउस रिन्हक', भनसा कएने रह । हम ताबे पोखरिस' एकडुम नेहएने अबैछी ।

बेटियो सुहिकारमे मुड़ी झुलाक', कहलकै– हँ होत्तै । दुनू माय-बेटी, कते दिनपर आइ मनुख-माउस खाएब ।

हबर-दोबर बोराके मोटरी खोललक ।

ओइमेस' औन्हेमुहे, चरबहबाके निकाललक । से जे उ छौड़िया ओकर सुरैत देखलक, त' देखिते रहि गेल । सुरैत देखिक' लोभा गेल । आ ओकर जे झुलफीके केश देखलक त' नै पुछू लहालोट होइत उ बाजल– रे, से तोहर ई नामी-नामी लटछिटका केश केना भेलौ ? बड नीक हौ । कनी हमरो एना बना देबे ?

हँ गै, कैला नै ! छौड़ा ओइ बकलेलबी, ढहलेलबीके झोल-झौंस दैत, बाजल– हे गै, बनएबौ त' । महज ऐला हम जेना-जेना कहबौ, तेनातेना करबे, तब' तोरो हमरोस' नीमन लट-झुलफी भ' जएतौ ।

हँ करबै, ऐला तों जे जहिना कहबे, करबौ । छौंड़ीके मन सबासोलह अना मानि गेलै– हो चल, हमरो केहुना ओहन केश बना दे ।

उ कहलक– होत्तै, चल तों ढेकी घर । तोहर केशके ढेकी-उखरीमे कुटबौ । तब जाकरके एहन नीमन केश बनतौ ।

लदकल, लोभाएल छौंड़ी ढेकीक उखरीमे मुड़ी धएलक कि उ छौंड़ा हांइ-हांइक' चोट द', ओकर सौंसे मुड़ी कुटि देलक । आ काटि-कुटिक', ओकर माउस बनाक', चुल्ही आंचपर रिन्हलक ।

बुढ़िया आएल खाय ला', त' उ ओकरा बेटि बनिक', अहगरक' परोसा लगाक' खायक पड़ैसक' देलक ।

बुढ़िया मौगी छगुनाए, जे ई छौड़ी आइ मुह-हाथ झाँपिक', कथिला देलक ? तैयो, ओकर त' धियान रहे माउसपर । से बेसी नै विचारिक', हपसिक' लागल माउस- भात खाय ।

उ चरबहबा ओमहर कएने की रहए, से नै बुझलिऐ ? ओकर नुआ-बस्तर पेन्ह लेने रहए मुंह-हाथ निमुनक' झाँपि लेने रहए, अनमन ओकर बेटिए सरिखेके धूआधजा बना लेने रहए । से रकसनियाँ, कहीं चिन्ह नै लए ।

एमहर उ बुढ़िया माउस भात खाय । आ ई छौड़ा बिलाइ जिका नकियाक' कोठी गोरा त'र स', बाजए– म्याँउ म्याँउ म्याँउ ! अपना बेटीके, अपने खाँउ ! म्याँउ म्याँउ म्याँउ !

– म्याँउ म्याँउ म्याँउ अपना बेटीके, अपने खाँउ म्याँउ म्याँउ म्याँउ !

– मार त' ऐ बेटखौकी बिलाइके । केना अलछी जिका अदका-फदका पैढ़, हमरा की कहै हबे ! थरिया देखाक', बिलाइके सिहाक' गलगरही बाजल– गे देखत', हम बेटीके खाइ छी ? की छडाके !

– म्याँउ म्याँउ म्याँउ अपना बेटीके अपने खाँउ म्याँउ म्याँउ म्याँउ !

– मारन' गे मारन' । गे ऐ बिलाइके मार न', पिटना । मारिक', भगा न' एकरा ।

बुढ़िया बेटीके कहए, बिलाइके भगब' । आ से उ बेटी रहए, तब न' आबए आ बिलाइके मारिक' भगाबए । से रहए त' उ छौड़ा । छौंड़ा ओमहर अनघोल कएने रहए–

– म्याँउ म्याँउ म्याँउ अपना बेटीके अपने खाँउ म्याँउ म्याँउ म्याँउ !

– म्याँउ म्याँउ म्याँउ अपना बेटीके अपने खाँउ म्याँउ म्याँउ म्याँउ !

बड़ी कालपर बुढ़िया खौंझाक', अपनेस' कोठी गोरातरमे बिलाइके मार' जे गेल, कि याहले-वाहले, नुआं-तुंआ खोलिक' खेलड़बा छड़ा अङनामे भागल । आ लागल कुदि-फानिक', अनघोल कर'

– म्याँउ म्याँउ म्याँउ अपना बेटीके अपने खाँउ म्याँउ म्याँउ !

बुढ़िया ओकरा एमहर खिंडहारए त' उ छौड़ा छड़पिक' ओमहर भागि जाय । आ' ओमहर जे जाय, त' उ एमहर दरबर द' भागि पराए– म्याँउ म्याँउ म्याँउ अपना बेटीके अपने खाँउ म्याँउ म्याँउ म्याँउ !

असल बात जे बुढ़िया बुझलक । दैवा रे दैवा ! रे सरधुआ, जोनि ढाहा छौंड़ा, हमरे बेटीके मारिक', सब लाहेब क' देलक । ततबे नइ, उनटे बेटीएके माउस खियाक', सब नाश कएलक ।

त'ब त' लागल उ आरो जोड़-जोड़स', माथ-कपार पिटि-पिटिक' कान' । खन ओकियाए, खन छटपटाए । दुख तकलिफस' ओकर मन अफचँख भ' गेल रहए ।

हकन-बिखन कनैत, ओकरा मार' दौगे । तैला चरबहबा भागे, आ बुढ़िया ओकरा गारि-बात दै त' छिहुलि क' भागे । एमहर खिहारे, त' उ छड़पिक', ओइ द'क' कुदैकक' भागे । भागे आ बुढियाके दुखाबे, खौंझाबे–

म्याँउ म्याँउ म्याँउ अपना बेटीके अपने खाँउ !

ऐ बातपर बुढ़िया आबखुशी कुदि उठे, आ औकलाएल मार' दौगे, जान-बेजान ।

एमहर एकरा ऐ बातमे मजा आबे । मजे नै आबे, ओकरा खौंझाक', अपने मारिए ओकरा मार' चाहए– म्याँउ म्याँउ म्याँउ

अपना बेटीके अपने खाँउ !

ई भागे, उ खिंहारे । भगिते खिहारितेमे बुढ़िया हकदुम भ' गेल ।

असोथकित बुढ़िया सिलौटीपरके लोढ़ए उठाक' फेकलक । से उ लोढ़ी ओकरा समहरलै नै । उ अपने खसल लटपटाक' । भरिगर लोरी रहै । ओकरा नै समहरलै आ नै जुमलै छड़ापर । से उनटे लोढ़ी ओकर अपने कपारपर जा लगलै– ठनाक ।

ओइ लोढ़ीक चोटस' आफत बुढ़िया गेल मरि ।

ओहो चरबहबा घुरि आएल, अपन गैबारी-चरबाही कर', बगीया गाछ त'र । ०००

हाथी भागल

एगो जंङल रहए । ओइ जङलमे एगो जमुनके गाछ रहए । गाछ रहबाके त' रहए लब-गौछलीए, तैयो टुटिक' फरल रहए । ओतक्का ओइ जमुन गाछपर बहुते वानरसब रहए । वानरा सबके दिन जामुन गाछपर खुसफैलस' बितए ।

एकदिन एगो बढ़का दनतरबा हाथी आएल । उ हाथीयो मीठ-मीठ जामुन भरिपोख खएलक । भरि हिक खाएल जे भ' गेलै त' लागल जामुन गाछके डाढि-पात अर्रा-अर्रा क' तोड' । बुझाइ जेना हाथी मातिगेल होइ ।

ऐस' छोटका मोटका सब वानर डेरा गेल । डर भ' गेलै जे उसुन आब रहत कत्त ? आ खाएत की ?

एकटा वानर बुधियारी कएलक । उ दौगल-दौगल गेल आ सरदरबा वानरके ई सब बिदैत देख'ला बजा' अनलक ।

सरदबा वानर आएल आ अपने चशमस' सबटा बिदैत बेबाइल देखलक-सुनलक ।

ओकरा ऐ बातके दुख त' बड लगलै आ दुख लगनइ की । हाथी रहै भारी भरखम जनारो आ बनरा रहए अदना पदना । बलीस' अबल फर' केना पाबओ ।

तैयो ओहो सरदरबा रहए बड खेलल । हारि मानि बिदैत बेपानि होइत देख', सह'बला नै । महज सोझ्फेसाझी ओकरास' लडिक' फरिछा त' नै सकेत छल । आ बिन दांव घावके ओकरास' फर' पाएब महा मोसकील ।

से, सबके तोक भरोस दैत सरदरबा बाजल जे हम जे जहिना ण्ज्ञछ-जहिना बजबै, तहूंसब तहिना-तहिना बाजिक' दोहसविहे । से नै करबे आ बल बतिअएबे, त' जानो जएतौ आ ऐ गाछस' हाथो धोअ' पडतौ, से हटले ।

मरता की नै करता ? सब हेंहकारी भरलक– कहबै ! जे जहिना कहबहो हमहूंसब तहिना करबै ।

सेहे भेलै । हाथीके लुलुअबैत सरदरबा बनरा बाजल- देखही रै, ऐ हाथीके नङरीए नै है रै !

सब वानर फेराफेरी ऐ बातके दोहसाब' लागल - हं रै ठीके, ऐ हाथीके नङरीए केना नै है ?

चारुभर ऐ बातके लबाफरबी हुअ' लागल– हं रै, देखही रै ! ऐ हाथीके नङरीए नै !

आब खुसीके बानर लागल झौहरा कर'– देखही रै, बिन नङरिएके बानर ।

पहिन ते' हाथी ऐ बातके कान बाते नै देलक । से टरुआइत बाजल– हमर नङरी हमर पोन्हपर !

– वाह वाह । एगो हाथी देखली । ओइ हाथीके नङरिए नै ।

– हाथी रे हाथी, तोहर नङरी कहां ?

जखैन सब भरस' एक्के बातके घोल फच्चका सुनलक त' हाथी उनैटक' अपन नङरी दिस तकलक । तकलक त' तकएबे नइ कएल । हाथीके देहे रहै महाभारी, बेडौल । से ओकर अपन छोटका नङरी दैखएबे नै कएल ।

ई जे कतबो उनटि-पुनटिक' ताकए त' उ देखएबे नै करए । हाथीके देहे बड भारी, बड मोटाएल, से एकरा उनटिक' देखएबे नै करए ।

ओना नङ्गुरी रहै ठामे । नै जे देखाएल त' हाथी अकचकाएल ।

ओमहर बनरासब अनघोल कएने रहए– देखही रै, बिनु नङरीएके हाथी ।

हाथी अदकल आ डेराएल । नङरी ला' लाजो लगलै बड ।

– नामलोली नामलोली । एगो हाथी देखली ।

– हं रै, देखही रै ! ऐ हाथीके नङरीए नै !

– बुझि गेली, परेखलेली । बिनु नङरीएके हाथी ।

– हमहूं देखली, तंहू देखली बिनु नङरिएके हाथी

पछाति हाथीके पक्का बिसबास भ' गेलै जे हमर नङरी हेरा-ढरा गेल अइ । ऐ बात ला ओकरा बड़ लाज लागि गेलै । ओकरा हाथ रहै नै जे गांड़ि झांपओ । से उ नङरी सुटकाक', लतोपतो ओहि ठामस' भागल ।

हाथी भागल जाय । बनरा फदका पढ़ैत, ओकरा पाछा-पाछा खेहट्टा कएने जाए–

– देखही रै, बिनु नङरीएके हाथी ।

– नामलोली नामलोली । एगो हाथी देखली ।

– बुझि गेली, परेखलेली । बिनु नङरीएके हाथी ।

– हमहूं देखली, तंहू देखले, बिनु नङरिएके हाथी !

हाथी एहन क' नै लाजे-बाते भागल से कहियो पलटिक' कहियो उद्दह नै देलक ।

बानरसबके दम पलटलै । सरदरबा बुइधे जामुनके गाछो बांचि गेलै । ०००

गोनू झाके खिस्सा

१

एगो रहए गोनू झा। उ बड चुस्त चलाक रहए। छक्का पंजा बड जनै। ओकर पार पाब'बला ऐ परोपट्टामे केउ नइ रहै। उ रहए त' अहि लोक समाजके, मुदा उ आन स' कए धान उपर, बहुते डेग हटिक' रहए। धूर्तइमे ओकर ना बाजल रहए।

महज ओकरामे एगो निमन निजगुत बात रहइ। से कि त' उ केकरो हानि नइ पहुँच'बै। तैं की, अनर्गल अनटोटल लोकके, छकाक', उन्टे गोनैर ओढ़ाक' ओकरा नाके सुते पानि पियाक', बानि छोड़ा दै।

जातिके उ बाभन रहै। कहै जे उ पढ़ल पंडित रहै। तैयो ओकरामे तेकर टेंढ़ी गुमान नै रहै।

पसर पड़ने उ केकरो नै छोड़ै। ऐ बातमे, से ओकरा आगू, लोक रहौ, कि देवता।

ओकर करनी करामातके बड़-बड़ खिस्सा पेहानी सब हइ। कत्ते कहू ? कहब त' कहिते रहि जाएब। तैयो सठ', निङहट'बला नै ! तैयो ओइमेके एगो दूगो कहि सुन'बै छी !

गोनू झा गा' द' क' कमला धार बहै। धार बड़ उत्थर आ धरगर रहै। खन ए द' क', त' खन ओइ द' क' बहै। जै द' क' उ धार उपटिक जाइक, तै चौरीके कटनिञा क'क', बालु बुरुज क' दै। चौरी बला जित्ते मरि जाइक। गिरहत बिलैट जाइक से हटले।

से समाजमे बड दहसत अनदेशा रहै। कमलाके कबुला पाति बड लोक करै। जोड़ा फुट्टा चढ़ौनास', झाँप गेरुआस' त'र क' दै। मनता मानै कैला से नै बुझलिऐ ? भल भाइ रे, हमर चास बास निमन अमंच रहि जाय। हमरा चासके, खेत पथारके कमला कटनिञा काटिक' लाहेब नै क' दिए। कहाँदुन उत्थरी कमला से कइयो दै। देखा-सिखीके दुनिञादारी। अदक अनदेशा गोनुओ बाबूके तरेत'र मनेम'न बड रहैन।

बातेमे त' सब है, आ बातमे गोनू बाबू दलिद्दर कोन पुर-चुके रहितए ? से ओहो कमलाके एकसय एक बलि मानि देलकैन। ऐ लोभमे लोभाक' कमला गोनू बाबूके चासके काते करोट द' गेलै। अनका लहदह उबजल चासके लाहेब क' देलकै, गोनू झाके चासके लहलही ओहिना अमंच भरपाय रहलै।

आब ऐ बातके होइत हबाइत भ' गलै कत्ते दिन।

ओमहर सिहाएल असियासल कमला गोनू झाके बलिके बाट ताके। ओमहर गानू झा घमि नै रहल रहए। एहिना भादो वितबाके बितल, आसिन चढ़ल। कमला मनेमन गमैय, गोनू नै घ'मल ! आसिन स' कातिको बित' लागल। पाँकक फेंके, गोनू झाके धान लहलहाएल, फेन जिका उधिआएल जाय। उजहल चास देखनहुस रहए। सरिस' फुटिक', निमने नाहित चौराएल जाय। लोक देखै त' ओकरा कह'पड़ै, हँ उपजा होए त' गोनू झाके चास सनके। नयनाके बीझ मेटब'बला। अपना पालीमे, ऐ देहे नेहे एहन सम्हरल मन मीठ कर'बला उपजा आइतोरी नइ देखने छलिऐ।

ऐमे सब हाइ दोहाइ दै कमलाके !

अगहन जे चढ़लै आ धान तिलैक क' तिलोरि जे हुअ' लगलै, त' चढ़ौना ला' कमलाके सबुर सन्तोखके बान्ह' टुटि गेलै। हारि-हुरिक' नै जे रहल भेल्लै, त' बलि चढ़ब' ला, कमला गोनू झाके सपन देलकै। सपनामे जे गोनू झाके मन पाड़लकै त' गोनू झा सोहरदे आडे, मुहक सुसकले, भाखि गेलखिन– मर, ऐमे कह' केकोन बात ? पलखैत नै छल, से नै चढ़ौना चढ़ा सकली। आइके विहाने, छोलेपर छुलकले हम चढ़ौना, अहाँके चढ़ा दै छी।

आ सेहे भेल्लै। जहिना कहने रहै, तहिना एकसय एक माछीके पकड़िक', गोटागोटिक' ओकर बलि कमला किनहेरमे चढ़ाक' उसरडि देलखिन।

लोहछले-पितहले परगट भ' क' कमला गोनू झाके मुलकनके डँटलक, डपटलक– रे, तों ई की कएले ?

शान्ते चित्ते, नहुएस' बाजल– माय, कबुला बलि। एकसय एक बलि ! जे गछने छली से चढ़ैली।

– त' तों खँसी-पाठी साँती माछी कोनोलाजे, बाते चढ़एले ?

– खँसी-पाठी त' हम नै छगने छली। हम त' खाली मन्ता, कबुला कएने रही, एकसय एक त' से चढ़ैली। ओइमे एकौगो घटी, कुघटी हए त' कहू। पाँचगो बेसीएक' चढ़ा देब।

– देख तों हमरास' लबरपनी असघैं कएले ! तेकर भोग तोरा लगले भोग' पड़तौ।

– कोन सुपत के ? जे ओझरी कैंच लगा क', उदमति चढ़ाक', करलग्गु तरघुसका चढ़ौना, बलि लेतै, तेकरा आब एहिना होत्तै। से उ लोक रहो कि देवता !

हनहन-पटपट करैत, सोझे डिठे कमला सराप द' देलकै– जो, तोरा हमर सराप लगतौ ! ऐ दाबिर, सौंसे चासमे भैरे पथिया धान होत्तौ !

ऐपर गोनू झा हँसिक' रहि गेल। एकर खौंझ कमलाके आउर अगराही लेस देलकै।

ओमहर धान पकलै आ एमहर गोनू झा महाधत्तिङा, गहींर हजार पाँचसय मन धान अँट'बला, एगो तरहरा खनएलक। लकड़ी बाँसके बलधर ध'ध' क' ओकरा खढ़-पातस' झँपलक आ ओइपरस', चलाकी की कएलक, त' एगो नमहर पथियाके पेन्ह

काटिक' रखबएलक । आ लागल दौनी करा'-करा' पथियामे धान बोझ' !

पथियाके पेन्ह रहै काटल से, कतनो ढारै, धान चुक' तरहरा तरमे चैल जाइक । पथिया रहिजाइक खालीके खालिए ।

आब त' कमलाके सरापके गोनू झा वरदान बना लेने रहए ।

फेरु भरलै कहिया ? त' जहिया सौंसे. तरहरा भरिक', गोनू झाके कइएक सालके उपजा टलिया गेलै ।

कमला हँसिक' हारि मानि लेलक– जो रे गोनुआ ! तों जितले, हम हारली ! तोरास' जे-जे भिरत, से' पछड़िक' चित्ते खसत !

०००

२

एहिना एक बेरि गोनू झाके कुल पैरवारमे मरन-हरन भ' गेल रहै । सुधि सराधके भोजभात ला उ गौंआ गरामतिके हकारिक' बैसकी बजएने रहए ।

आब ला', गौआ गरामतिसब लागल भोज लागी ग'र चढ़ब' । भोजो कोन त' सभा चौरासीके ।

एमहर गोनू झा ऐ बातपर, नाकपर माछिए नै बैस' दिए । दुनू भरस' बड महजरो हुअ' लागल ।

गोनू बाबू कहै– घटल घर हए । हाथमुठी खाली हए से हटले । ऋण पैंच ल'क' नम्हरी करु, त' थोड़ भ'क', थुसी जाएब ।

खबैयासब जीद्द पकड़ने, क'र लगबै– अपने एहन छी, ओहन छी । अपनेके एत्ते हए, ओत्ते हए । कुल-खन्दान केहन नामी गरामी हए । अपने नै करबै त' के करतै ? ऋण पैंच डरे गतिमुक्ति नै रोकियौ । ओमहर ओकरा पैठ होत्तै, एमहर अपनेके ना-परतिष्ठा चलत । अपने खाली छी त' की भेलै । खाली मुह खोल'के देरी हए । पाँच कहबै त' पचीस झहरत, सय कहबै हजार आओत । ऐला निचामुहें मुड़ी नै छिपल जाओ ।

बड जे लग्गो-बलाय जे कएलकैन गोनू बाबूके त' हारि-हुरिक' सुइकारि लेलकै ।

ऐ बातपर सब सहमतिए होइत गेल सेहे नै, गोनूबाबूके कच्ची नइ, पक्की भोज गछा लेलक ।

गोनूओ झा रहए त' खेलल खेलाड़ । धूर्त्त शिरोमणि । से मेहियाइए पेघराइए क' पंची सबस' अर्जी लगएलैन– औ, अपनेसब जे कहै छी, से हम गछै छी । हारि माने बात टुटे । त' तैमे सब बात अहींके रहओ । खालि एकटा हमर मिनती लागओ न' ।

– आह आह, किएक नै ? सब प्रसन्न होइत बजैत गेला– कहल ने जाओ, की कहल जाइछै ? सब जय-छय अपनहिके हाथे मुहें होत्ते !

– नै, हमर हिच्छा छल' जे भोजमे सब मिठाइके जौंड़ै खिया देल जाय त' नै होत्तै ?

– किएक नै, किएक नै ! उ त' अति उत्तम, सर्वोत्तम ! अपनेके, जेहे जहिना विचार हो ।

सब मानि क' अपन-अपन घर घुरैत गेला ।

सभा चौरासीके नौत पड़ल । ठेकले दिनपर भोज खायलेल पंचसब गाम-गामस' धरोहिया लागल, ढङरल आएल आ आबिक' गोनू बाबूके दुरा-दलानपर ढेंरियाए लगला ।

ओमहर गोनूओ बाबू सबके बोलिए बहटारस' आगत-भागत कर' लगला ।

सभाके भोज आ करमान लागल लोक । तैयो केउगोटै तिर चुल्हापर अटका चढ़ल कतौ नै देखैत । छनर-मनर, रिन्ह' पकब' टङटोर सङोर केकरो कत्तौ नै देखाइ दैक । बहुते लोक मनमे अँटकारे, भजारे हमरा खएलास' काम । भन्सा-भात कतौ बनौ, से जानओ अपन गौंआ-घरुआ ।

बेरस' कुबेर भेल । मलछल लोक अहर तकय, पहर ताकय । तब पहरपंथ बितलापर, विजो भेल । सत्तैर लागल । पात परसाएल ।

आ पातपर ढकैस, कठौतमे भातके बदला लागल ऊँइखक गुल्ली, कुट्टी मुठिए बौकटे परसाए ।

ऐ बातपर सब अकचकाए । मर, ई की ? तैयो सब गबदी मारने रहए । कल्ला केउ नै अलगाबए । से कत्ते काले एना रहल ।

सबतैर जे परसा गेल त' बारिक सब बाजल होउ हरियर । हरिहय होउ !

मर तोरी भला करोके नैहत्तन ! भात नै दालि , तिमन नै तरकारी ? सब अकचकाएल । लाबाफड़बी भेल– तब छुच्छे कथीके, केन्ना हरियार ?

सबके कछमछी व्यग्रता बढ़ैत गेल । घोल असमान छुअ' लागल । हल्ला-गुल्ला मचि गेल । केउ मुङबा-मिठाइ त' केउ भात दालि ला' सब गद्दह गोहारि क' लागल ।

बड़ी कालपर गोनू बाबू अएला ।

सब कहनि– गोनू बाबू ई की ?

केउ कहथि आब बड भेलै । होउ, चौल कजाक छोड़ू । जे अइ से परसू ।

सेहे त' परसाएलअ' ! मिठाइयक जड़ि-मूल । हम त' गछनहि रही, मिठाइके जड़िए, खिआएब । से खाइत जाउ ।

सब बमछल, लुलुआएल भुखले पेट पिटैत, अपन-अपन गाम-घर घुरैत गेल ।

ऐपर गोनू झा हँसिक' बजला– घ' पकैड़क', करलग्गू भोज खाएबलाके, आब एहने हाइ हुअओ !

०००

बगड़ा-बगड़ी

एकटा तिलबिखना बगड़ा आ तिलबिखनी बगड़ी रहए । दुनू सांइ-बौह रहए । एकदिन लटलट छटछट करैत बगड़ी कहलक बगड़ाके - रे बगड़ा !

बगड़ा बाजल – गै की बगड़ी ?

– हम दुलरैतिन नैहरा जाएब !

– त हम नाचू कि कानू ? जएबे त जो !

– छुच्छे जाएब त ढिड़री भौजी उलहन देत । से नै त' पुरी पकाएब तब न जाएब ।

तैपर बगड़ा बाजल– बड़ नीक बात भले कहले । तों जो केकरो पथारपरस' बदामक दालि ल' आन हम तेल आँटाके जोगार कएने अबैछी ।

बगड़ी उड़ैत-उड़ैत गेल त' देखलक एगो अङनामे बढ़कीटाके पथार पसरल । उ चकुआइते गेल आ भरि घोघ, भरि लोल बदाम उठा लाएल आ लागल जँत्तामे दालि दड़र' । जँताके किलरा रहै फाटल, से ओकर गहमे सबटा दालि अकसि गेलै ।

जत्ता कहलक बगड़ीके– बहिन, बड़हीके बजा लाउ ! ओहे किलराके गह फाड़ि, दालि निकालि देत ।

झूड़-झमान बगड़ी गरजे गेल बड़ही लग– बड़ही बड़ही बड़ही ! बड़ही किलराके चीड़ू । किलरा दालिके निकालू । आ से नै त', बगड़ी की खाएत की पियत आ की ल'क' जाएत दलकल नैहरा ।

बगड़ी अपने बेगरते अफसियाँत रहए । से निछोहे बाजल– हमरास' नै होएत । जा क' लाठीस' कहियौ !

पित्ते इनहोर भेल बगड़ी आएल आ लाठीके कहलक–

लाठी लाठी लाठी !

अहाँ बरहीके डाँड़ू ।

बड़ही किलराके चीड़ू ।

किलरा दालिके निकालू ।

आ से नै त',

बगड़ी की खाएत

की पियत आ की ल'क' जाएत दलकल नैहरा ।

लौठा लाठी राड़ जिका बाजल– से सब हमरास' नै होएत ! तों लत्तीके कहीग' !

ओत्त'स' हनहन-पटपट करैत आएल आ निछोहे लत्तीके कहलक– लत्ती लत्ती लत्ती !

लत्ती लाठीके बान्हू ।

लाठी बड़हीके डाँड़ू !

बड़ही किलराके चीड़ू ।

किलरा दालिके निकालू ।

से नै त', बगड़ी की खाएत की पियत

आ की ल'क' जाएत दलकल नैहरा ।

लत्ती लटपटाएले ओझराएल जबाब देलक– हम ऐ फेरी फनमे नै पड़ब ! जा क' आइगके कहियौ ।

गोर पटकैत, ठोढ़ पटपटबैत आइगस' कहलक – आगि आगि आगि !

आगि लत्तीके जारु ।

लत्ती ! लत्ती लाठी बान्हू ।

लाठी बड़हीके डाँड़त !

बड़ही किलराके चीड़ू ।

किलरा दालिके निकालू ।

से नै त', बगड़ी की खाएत की पियत

आ की ल'क' जाएत दलकल नैहरा ।

तलफल आइग मिझाइत बाजल- से सब हमरास' नै ओएत ! जा क' पाइनके कही ।

तर घरती उपर आसमान एक करैत पाइनके निहोरा करैत कहलक– पाइन पाइन पाइन !

पाइन आइगके पझाउ ।

आइग लत्तीके डाहत ।

बड़ही किलराके चीड़ू ।

किलरा दालिके निकालू ।

से नै त

बगड़ी की खाएत, की पियत

आ की ल'क' जाएत दलकल नैहरा ।

पाइन, पानि-पानि भेल ठोपाइत बाजल– ई हमरास' नै होएत । जाउ हाथीके कहियौ ।

निछोधाह चारुनाल चित्त भ' आइग हाथीके निहोरा मिनती करैत बाजल–

– हाथी हाथी हाथी !

हाथी पाइनके सोखू ।

आइन आइगके मिझाउ ।

आइग लत्तीके डाहत ।

बड़ही किलराके चीड़ू ।

किलरा दालिके निकालू ।

से नै त' बगड़ी की खाएत, की पियत

आ की ल'क' जाएत दलकल नैहरा ।

बगड़ीके विपति बरनेमा सूनि हाथीके दया लागि गेलै ।

उ आव देखलक ने ताव आ लागल पाइनके सोख'।

डपौर शंख

अहिना कोनो गां नगरमे एगो बाभन रहए । उ कैनको पढ़ल लिखल नै रहए । से उ निकम्मा बाभन बड़ गरीब रहए । कमाए-खटाए हैन', से उ खाएत की ? जेकरा अपने पेट पहाड़ रहतै, से अपन बालबच्चा सुनके केना पैतपाल करत ? ऐला एहन बाभनके घरमे, दुनू परानीमे नितो एक लड़क्का लड़ाइ झगरा कमस' कम उठौने रहै । ई एहन ओकरासुनके सब दिनमा खेरहा रहए, तैं आन ओकरा बीचमाझमे, नै पड़ए । कहबी आ करनी ओकरामे बड मिलै– धने रहने बौह आ बेटा-बेटी, अपन-अपनैती ।

कहियोके नै से ओइ दिन ओइ बाभनके बौहके झगड़ा-दनके, गाड़ि-बातके बड आनि लागि गेलै । कैन बातो रहै तेहने सनके । मौगिया ओकरा आन दिनस' कैन बेसिए रोखाक', धोआक', लुलु-थुथु, उलाउ-जुलाउ कएने रहैके से । हारि अकछाक', बाभन धरस' निकाला भ'क' कमाएला बहराएके आंट जोरेठोंठे कएलक ।

आब जे रहैाक, रहैत' बभिनिञाके ओहे मङछुआ खामिन । से, कोनो धरानी, केहुना कतौस' दू रोटीके चिकस आनिक', ओकरा रोटी पकाक' बटखर्चा बान्हि देलकै । रपटल पैरा, भरि दिन जाइत-जाइतेमे गमा देलक । बाटेमे ओकरा राति भ' गेलै । रातिमे उ जाएत त' जाएत कत' ? एसगरके बटोही । नमहर पाँतर,गाम-घरके दरस नै । से उ कि कएलक त' ओइ चौरिएमेके एगो बढ़का धतिङा गाछतर राम-रामक' डेरा धएलक ।

थाकल रहए आ ओकरा कोनो काम रहै नै । दोसरमे रहए उ मुलकनके थाकल । से, सूत'स' पहिने उ सोंचलक जे सङमेके रोटी खा' ली । ऐला उ अपन मोटरी खोललक । भुखाएल उ बड रहए आ रोटी रहै दुइएटा । फेरु दुनू जे उ आइए खा' लित त' काल्हि की कत्त' खाएला भेटितै कि नै, तेकर से अन्देशा ।

से उ रोटी निकालि क' झखे-तपे, छगुनाए-गुनधुनाए– एकटाके खाउ कि दुन्नूके !

रहि-रहिक' एके रटना रहए– एकटाके खाउ कि दुन्नूके !... एकटाके खाउ कि दुन्नूके !

खाय नै आ खाली भखे– एकटाके खाउ कि दुन्नूके ! एकटाके खाउ कि दुन्नूके !

– एकटाके आइ खाउ आ दोसरके काल्हि !? कि दुन्नूके आइए खाउ !

– एकटाके खाउ कि दुन्नूके ! कि करु की नै ।

– एकटाके खाउ कि दुन्नूके ! एकटाके खाउ कि दुन्नूके !

– एकटाके आइ खाउ आ दोसरके काल्हि ? कि दुन्नूके आइए खाउ !

– एकटाके खाउ कि दुन्नूके !

अन्तमे हारि-हुरिक' रोसा-जोशाक' बाजल– हट, हमरा खाए दे !

ऐत्ते जे जुमुस बान्हिक' जे बाजल, कि गाछपर स' दूगो दैंत डरे सुटकल उतरल, आ कल जोड़ि क', निहोरा मिनती करैत– नै हौ बाउ, हमार जान बकैस दा' !

बात कि रहै, त' ओइ गाछपर दुगो दैंतक बास रहै । आ ई बाभन जे कहे– एकटाके खाउ, कि दुन्नूके ! से उ त' कहे रोटीके । जे एकटा रोटीके खाउ कि दुनू रोटीके ! डरे डेराएल, अदकल दैंतके बुझाइक जे ई हमरे दुनूके कहै हबे, जे एकटा दैंतके खाउ कि दुनू दैंतके ?

– दोहाइ, बाभन देवता के ! दोसरो अरजी लगएलक– हौ दैव ! जानके बदलामे जे मङबा से हमरास' माङि ला' ।

– जे माङ' ! धन-वित ! ढौआ-रुपैया ।

– घर-घरारी , कोठा-अटारी ! अन-धन लछमी, जे माङ' ।

– जे मङबा, से छनेमे छनाक, हम पुरन करबो !

डरे त' ओइ बभनाके बकार नै फुटे । आ दैता सोंचए, बाभन घमैअ' नै । से आब खुशी गोहराबे, पोल्हाबे । माङ' ला' औगताबे ।

बड़ी काल प', सब बातके थाहि गमि क', बाभन ख'खसल– अँ-हँ-हँ-अँ ! देख आब तों जे कहैछे, त' हम कि करब । तोहर जान बकैस दै छियौ ! ऐ सांती तों हमर सब दिन ला' गरिबी निङहैट जाय, से उपाय क' दे' ! नै, त' हम नै मानबौ ! से बुझि राख ।

– धुत्त, एतनाइते टा के बात ! दुनू दैंत खुशी होइत, कलैपेक' बाजल आ चट्ट द' एगो शंख आनि क' देलक । आ कहलक– हे एकरा फूकि क', कहिअ'हो– सत, दैंतके देल छे, त' फलना चिउज ध' जो, त' से चिउज तोरा कहैत मांतर आगूमे आबि जएतो । से, जे जहिया मङबहो सब माङ, आरहैत कहैत मांतर पुरती ! बाम नै जएतो ।

तब ऐ बातस' दुनू भरके खुश । दैंत सन्तोखके सांस फेरए जे जान बाँचल आ एमहर गदगद मखमख बाभन उताहुल भेल जे धन सम्पैतके अनमोल ओर पैरि लागि गेल ।

बूझ' बेतरे बाउर

एहिना कोनो गां-ठाममे एगो अंटगर गोहियार बुढ़बा रहए। उ बुढ़बा बड काजुल चौतरा रहए। अपन देह धुनिक', बांहि समाङ बुत्ते, जुटगर असामी बनि गेल रहए। नामी गरामी गिरहत रहने, अपन चौगम्मामे उ किछु कहाबए।

बुढ़ारीपनमे, जान-समाङ लथरने, ओकर मिरतुकके समैया आबि गेल रहै। कतेक दिनस' धरती गर धएने-धएने, बुढ़बा बुझि गेल जे आब हम जीयब नै। से उ चाहए जे हमरा बाद, बहुत घाम-पसेना चुआक', काया कष्टस' अरजल धन, बेटा बुत्ते बेबाइल नै भ' जाय। से उ कि कएलक त' अपन बेटाके लग भिड़मे बजाक', निमने नाहित समझाक' कहलक– बौआ रै, हम बड मेहनैतस' धन बित अरजने छी। आ एकरा बचब' ला तों हमर ई बात गिरा-गेंठ बान्हिक' एकरा पालन करिहा। तोरा जे मन होतो माछ खाइ, त' सय मूड़ा माछ खइहा। आ बिनु बजएले सभा लगबिहा!

ओकर लगले बाद बुढबा मरि गेल।

ओकर बेटा बुढ़बाके कहब अनुसार सुइध सराधमे सब दिन सभैतिए भोज कएलक। ओकर किरिया करमके उपरान्त ओकर बेटा आब लागल बजारस' सय-सयटा बढका-बढ़का माछसब मङा-मङाक' खाय। सयटा माछ उ केनाक' खा सकित? आ ओकर बाप त' ओकरा सय मूडी माछ खायके आढ़हैत देने रहै। से उ कि करए, त' सब माछके मूड़ा काटिक' अपना घरमे रिन्हए आ धर पूछीके अपन दै-दियाद, हितलग, अपनैतीक लोकके द' दिअए।

ओहोसब मङनीके माछ अपनैतीमे खा-खा क' नेहाल रहए।

बापके कहब अनुसार उ देखले दिनपर सभैती भोजो कएल करए।

बुढ़बापालीक भरल घर आब छुच्छ हुअ' लागल। खगते, अभाबे ओकर खेतो पथार बिकाय लागल। सिरी-सबाइ, सबहे सन्स बड़कैत, घटिक' हेठ भ' गेल।

से अहिना ऐ बात ला' उ एक दिन अपन दुरा दलानपर बैसल झखैत तपैत रहए। ततिएकाल ओइठाम एगो पाकल परोरिया बुढ़बा आएल आ ओकर लपच लौत हालैत देखिक' कहलकै– हौ तोरा कोन बात बेबस्थाके विपैतमरुआ सोंच लागल हौ, से त' कह'? हर' मेट'बला बात होतो त' तैमे हम कोनो कमी कोताही नै करबो।

थकमकाइते, गुनधुनाइते उ बापके कहल बातके ओकरा कहि सुनएलक। आ अखैनताके दुखनामा सेहो कहि गेल।

ऐ बातके सुनिते बुढ़बा त' चिहुकि, चेहा गेल– जा' हौ मरदे नैहतन! हौ केहन छा? हौ बूझ' बेतरे अमरित तोरा लेखे बिख भ' गेलो। तोहर बाप त' बड़ बुझनुक गोहियार रहओ, जे तोरा घुमाक' नीक उपदेश देने रहओ। बुढ़बा ओकरा खूब निमन नाहित बोधैत समझएलक– बाप तोहर तोरा सय मूड़ी माछ आ बिनु बजएले सभा दिया जे कहलको, तेकरा तों उन्टा उबानि बुझि गेलहो। ओकर कहब रहै, सय मूड़ी माछ माने छोटकी माछ! छोटकी माछमे सयके सय मूड़ी होइछै। एकरा खएने पाइयो कौड़ी तेहन नै खरच भेल, आ भरि घरक लोक अहगरस' खएलक। आ बिनु बजाएले सभा भेलो, घूरा। दुरा दलानपर जे घूरा लगएबहो त' बिनु बजाएले लोक नै ढडैर जाइहै? से भेलो बिनु बजाएल सभा! जैमे कोनो कनिको सेर-सिदहा नै लागल।

ई बात सुनिते जेना होकर भक खुजि गेलै।

बापक गुनगर बातके आब उ नीक जिका पालन कर' जे लागल, त' देखले दिनमे ओकर लथरल लरखराएल घर जुटि गेलै आ ओहो हुबगर गेंठी टेंटबला भ' गेल।

ooo

कल्पनास' पूछस' पहिने अपन बटुआस' पूछि लिए।

– फ्रैंकलिन

गोहियार बुढ़बा आ दैंता राछस

कोनो गाँ-नगरमे एगो पाकल पड़ोरिया बुढ़बा रहए ।

उ बड घटेनगर आ गोहियार सुतिआर रहए । ओना उ रहए अपन जातीय सभाके माइजन, तैयो दसटोलीके उ डिही परधान जिका रहए । से एक दिन उ अपन खेत-पथार देख', चौरी-चाँचर गेल । गेल जे रहए, से सुनहठ पाँतरमे ओकरा एगो कालसनके दन्तरबा राछस, अनचोकेमे आबि बुढ़बाके घेरलक । आ बटघेरी क'क' छिमाइन छोड़ब' लागल– हँ-अं-अ, बुढ़बा रे ! हम त' तोरा ख-ए-बौ ।

लक्का उचक्का बुढ़बा गैम परेख लेलक जे हमरा आइ काल घेरलक ।

तैयो उ नै डेराएल, नै औगताएल । हँ मनेमन ऐ आफत विपैतस' उगरासके गौं भजारमे लागि गेल ।

से ईहो ओइ राछसके हंटिते डंटिते ललकारा भरलक– की रे ! रे तोहर हम कोन धार-बिगार कैलियौग', जे तो हमरा खएबे ?

– से नै बुझले ? रछसबा नडर-उपार कर'लागल– तों हमर धार बिगार नै कएले तैं की ! तों नीक छे । बुझनुक चलाक छे । तोरा चलते एत्तके सब लोक सुख-शान्तिस' रहै है तैं ।
– है, त' हम जे लोके नीक करैछिऐ त' तोरा ऐमे की जाइहो ? बुढ़बा छगुनाइत बाजल ।
– हम राछस छी । राछसी बग्गय-बानि हमर हए । हमरा सबके चालि-बानिके उन्टा छे । तै तोरा खएबौ ।
– इस्स रै, कथीके से ? मङनीमे तों हमरा कोन सांतीमे खएबे ?
– अच्छा हो । सांतीएके जे बात है त', एकटा बात कर । तों हमरा जे जत्ते काम अढएब, से हम क' ध' देबौ ! रछसबा गभनी गभुआएल बाजल – आ हे देखले, जखैन ते जे काम कएल खत्तम होत्तौ, तखैनते हम तोरा खा लेबौ । बोल हौ सुहिकार ? ... नै त' ओहूना हम त' तोरा खएबे बरबौ ।
– हँ, से बात ? देख, बात बाज साधि-समधानिक' । ओइपर आरुढ़ रह' पड़तौ ।
– हँ त' की । रहबौ । ऐ छाड़िक' कोनो दोसर-तेसर बात नै !

खेलल खेलार बुढ़बा रहए बड बुधियार । से मनेमन ओ राछसके हिटियाबे, डिठियाबे । एकरास' बलमे नइ, बुइधस' पछाड़ब, तबे ई पछाड़ खा क' पराएत । आन त' अखैनता कोनो दोसर रस्ते नै देखाइ दै हबे ।

से बुढ़बा निचा-उपर, आउग-पाउछ विचारिक' राछसके कहलक – हे देख, तों हमरा जे खाइए लेबे, तैंसातीमे लोकके भलाइ उसासके किछु काज क' दही !

– होत्तै । इहे सही । राछस सुहिकारलक– ले हो बाज, अढ़ा हमरा काज !
– अच्छा त' हो, जो आ ऐ दसकोसीक सबहे गाम-घर आ चौरी-चाँचरके जम्मे खुरपैरिया एकबटियाके खूम चाकर-चौरस उँच्चका सड़क बना आ' !

सुरफुराक' उ रछसबा उठल आ दौगलै गेल, दैंता दन्तरबा सड़ब बनब' ।

एमहर बुढ़बा विचारे जे दसगरदा सबहे काजो करा ली आ ऐ राछसस' उगरासो पाबि ली । तै फिराकमे जे बुढ़बा गुनधुन करैत रहए, कि आहि रे बा ! तखैनते उ राछस, कहब अनुसारके सड़क निमने नाहित बना आएल ।

आ अबिते आएल त' हकबाइ लिअ' लागल– है कोनो दोसर काज ? त' बाज । नै त' आब तोरा हम खएबौ ?

– हँ-हँ हइ कि ! हइ-हइ । नीको काजके कोन कोनो कम्मी रहलैग' ! आ तोरा, हमरा खायके कोन हरबड़ी हौ ? खइहे किने । पहिने काम त' निङघटा आ ।
– त' बाज, आब दोसर कोन काज करियौ ?
– हे देख, ऐ गामके सीरा मथनीपर दूगो टुटल बान्ह है । बान्ह छलै त' लहदह अम्बोही धान रब्बी उपजै छलै । एकरा, बुढ़िया बाढ़िमे टुटने, ऐ दसकोसीमे रौदी अकाल पैर जाइहै । से लपकले जो आ लगले एकरा दुनूके निमन नाहित बन्हने आ ।

दौगल कुदकल राछस गेल आ कनिके कालमे एहनक' नै बान्हि देलकै, जे केहनो बाढ़ि, दाहरमे टुटहिबला नै रहि गेलै ।

केहनो बिकठ काज राछस छनेमे छनाक क' दै । आ काज खत्तम होइते, एकरा काँचे चिबाक' खा जाएला तरम-तैयार भ' जाइक । तै बातके बुढ़बाके डर रहै । से ओकरा दोसर अढौती दैत, कहलक– रे, बान्ह त' बान्हि देलही । महज नहैर, पोइन कहाँ खैन देलही ? ई काज त' तों या जएबे, आ वा कएने अएबे । से कैन, कएने आ-गत' ।

ठीके, राछसके खनल नहैर आ पोइन सबतैर छकछका गेलै ।

ओकरा खन'ला कोनो खुरपी कोदारिके जरुरैत पड़ै ? उंह, ओकर त' नहे रहै कए-कए छौ के ! एक्के तरहत्थीमे कए-कए धूरके माटि काटि लैक । से खनै कटै हांइ-हांइ । ओहो दुनू हाथे । नहे ल'क' जे चीरफरै त' नहैर खना जाइक । से उ खनै नै खेलै ।

ई जे काम रहै, से गौंवा-धरुआ हूंज-हँसेरी बान्हिक' जे

करितै त' महिनो भरिमे नै होइतै । से काज ई कहैत मातर क' देलकै– बान्ह त' बन्हा गेलौ ।

– हे देख, बान्ह-पोइन त' भेल्लो । महज पोखरी-इनारसन धरमकिर्त्त नै कएले, त' की कएले ? से नै त' गामेपच्छ पाँच-दस इनार आ आठ-दसटाक' पोखरि ताबे खनने आऽग' !

आहि रे बा ! दैंता खनल महा चाकर-चौरस डेराओन इनार-पोखरि सब खना गेलै । पुरना भथाएल इनार पोखैर सबके उराहिक' नया लौतार बना देलकै– आब त' सड़क बान्ह-पोइन, पोखरि इनार सब बनि गेलौ । आब त' भेलौ ने ! क'ह आब खइयौ ?

– कैला ? थाकि हारि गेल्ले से ?

– नै बड़ मन लगै हइ । मन होइहै कते करु, कत्ते नै । जोशाक', होइहै हाँइ-हाँइ करिते रह जाइ ।

– हँ करिते जो, करिते जो ! जत्ते करबे ओत्ते तरबे । धरम पुनस' तरबे । ऐ राछसी जनमस' उबरबे ।

– हँ हमरा ऐस' दोसरे सनके लगै हय । केना नै केना, आब ऐस' राछसी भछनके भूखे मेटा गेल ।

– ई सब धरम पुनके परभाव हौ । देखही न' तोहर त' राछसीपने बदैल जएतौ ।

चौरी चाँचरमे, खेत-पथारमे जतेक ढिमकी, झाहर, खोला खाड़हर, उबर-खाभर सब रहै, सब बुढबा सैर-साबुत करा लेलक ।

नदी सबमे पुल बनबा लेलक । एहन एकौटा काज बाँकी नै रहि गेलै, जे दसके उसासके लेल रहै ।

तलबल खरनाएल राछस ऐ बेर खायके नै, मेहीए बात निमने नाहित नहुएस' पुछ्लकै– तों ई काज बात हमरास' कैला करएला ? तोरा जे हम खायके बात करियौ, त' डेरा पराक' नै, ई कृत काज जे करएला ! तेकर ओजह की छलै ?

– देख, जे जनम लेलकै से मरबे करतै । हमहू बूढ़ भेली । तों जे हमरा खायला अएले त' हमरा भेल जे हमर मरन तोरे हाथे, एहि विधि होएत । तब तों कहले जे हमरास' जे जत्ते काज करा लेबे, से करा ले । ऐ बातस' हमर मन बड खनहन भ' गेल । भल भाइ रे, त' कथी ला ! त' जाइत-जाइत ऐ बातपर किछु-मिछु दसगरदा महान कीर्त्त अहू बाते भ' चलए ! तोरा सड़े किछु पुन हमरो नामे जोड़ा जाय ।

– त' ऐस' हमरा की भेल ? हमरा केहन पुन भेल ? राछस बाजल– ई सब हम नै जानी । हम त' तोरा खएबौ ।

– खएबे से पहिने काज त' निङहटा ।

– त' कह की करियौ ।

– अच्छा हो दौगल-दौगल जो आ ऐ दस कोसीके पैरकनमा कएने आ !

कहैत मातर उ दौगल आ छने घड़ीमे चक्कर मारि क' चलि आएल ।

एमहर बुढ़बाके भेल आफत । उ त' केहनो बिकठ अजोध काज छन घड़ी पहरमे क' दै । एहन हल्लुक काज उ चुटकी बजबैतमे निङघटा दैक ।

याह ले वाह ले, राछस सोझे आबि क' बुढ़बाके आगूमे ठाढ़ भ' गेल ।

– अच्छा हो, सब तिरीथ-विरीथके दर्शन कएने आ ।

उ लगले गेल आ कहल अनुसार दर्शन क' आएल ।

– चारु धाम क' आ ।

ओकरा कहूं चल' पड़ै, पैदले कि गड़ी-घोंड़ापर ? पवन बसाती उड़ान मारै । कहैत मारतैर उ उड़िक' ओत्त' पुङि जाइक । सेहे भेलै । ओहो लगले क' आएल ।

– आब ? क'ह की करियौ ?

– तीनू भुवनके भरमन कएने आ' ।

उ सेहो क' आएल । आ बाजल– क'ह आब तोरा खइयौ ?

– थम्ह, नै औगतो । अच्छा हो जो ऐ सय कोसके पाँतरमे दौरहा लगोग' । दौगिहे आ राम नाम जपिहे । जपिहे आ दौगिहे । दौगते रहिहे आ जपिते रहिहे । हुकिहे नै । आ हे सुन । जाबे हम नै कहबौ, ताबे तों रुकिहे नइ ।

राछस बुझि गेल जे ऐ गब्बर गोहिया बुढ़बास' हम फर' नै पाएब । से उ लंक लागि क' ओत्तह स' गेल, से पलैटक' फेरु कहियो उदह नै देलक ।

जानू ऐ तप-किरीतस' ओकरा गति-मुक्ती भेटि गेलै ।

बुढ़बाके बुधियारीस' दैंता सड़क, रछसबा पोखैर-इनार, जलढर बान्ह-पोइन, सब ओइ दसकोसीमे बनि क', छकछका गेल रहए ।

०००

जँ अपनेमे अहंकार नहि अछि त' कोनो धार्मिक-ग्रन्थक एको पाँति पढने वा कोनो मन्दिरमे पयर रखने बिनु अपने निर्विवाद रूपस' मोक्ष पद पाबि गेलौं ।

– विवेकानन्द

राज भरथरी

एकराजमे एगो राजा रहए। उ भलमन रजा बड्ड दानी धरमी रहए। ओइ रजाके नां राजा भरथरी रहए। उ अपना परजाके पुतोकरनस' बढ़िक' मानए। परजो ओकरा भगमाने मानए। दान पुनके बले रजाके राजमे अनधन लछमी टाल लागल रहए। सीरी सबाइ आ संस बरकैत बड्ड रहै।

ओइ राजमे एगो मुनि महत्मा रहए। उ बड्डभारी तपसी रहए। से तपस' ओइ बबाके एगो अमरफल भेटलै।

उ फल पा'क' तपसी बबा बड्ड खुसी भेल।

महज उ मुनि रहे बड्ड गुनी विचारी। से उ अपना मनमे अटोरलक-बटोरलक त ओकरा भेलैक जे जाकरके हम त' छी तियागी तपसी। कोनो सुख भोगके हमरामे लबलेसे नइ हब'। तब ई फल आ'क', अमरे भ'क' हमरा कोन फैदा ? से नै त' उ राजके रजे बड्ड दानी-धरमी हइ। ई पुन्य फल ओकरे जे द' देबै त' उ सुन्नर अमर भ' जएतै। आ बहुत दिनतोरी जनताके सुख सुइबधा दैत रहतै।

रजाके जनताके सेवामे सुख होइहै आ जनताके रजास'।ऐ स' रजा-परजा सुखीत रहए, सेहे कर' चाही।

इहे सोंचि समैंझक' तपसी बबा उ अमरफल लेने-लेने रजाके द' आएल।

ओमहर रजा की कएलक त' उ फल रानीके धर' ला देलक।

राजकारजमे ओझराएल रजाके फलके सोहे नै रहलै। उ छिनरिया रानी नहिरेके खेलल खेलारि रहए। से उ फल अपना नै खाक' अपन लगबरबाके द' आएल।

ओमहर रानीके लगबार एगो रन्डी-बेसबाके द' देलक।

बेसबा जे बुझलक जे ई अमरफल हइ आ एकरा पाक' हम सुन्नैर अमर भ' जाएब। ऐ बात बातस' ओकरा उनटे बड्ड दुख। सेहो दुख कथी के ? त' से नइ बुझलिऐ ? भल भाइ रे, हम त' रन्डी-बेसबा छी आ नरक पापके कमाइ खाइछी। एहन गलीत जीवन ल'क' हम की करब ? से इहो मुनीए जिका सोंचि-विचारिक' फल लेने-लेने रजा ल' गेल आ तिरपित होइत उ ओकरा सोंइप देलक !

रजा फल देख क' अकचका, छगुना गेल। मने-मने गुनधुनाएल जे ई त' हमरा तपसी देने छलग ! ई एकरा, के केना देलकै।

असमन्जसमे पड़ल रजा गंओस' ओकरा पुछलकै जे ई फल तोर के देलकौ। तैपर उ टप' ओइ लगबरबाके ना बइक देलकै।

लगबरबाके रजा जे पुछलकै त' डेराइते, धकचुकाइते रानीके ना कहलकै।

जब जे ई बात रानीस' पुछलकै तब रानीके बकारे नइ फुटै। डरे त' रानी लागल बिन बसातेके, पिपरक पत्ता जिका थरथर कांप'। आंइख लाल-पियर क'क' रजा जोड़स' जे डवटलकै त' रानी हक्को परास भेल लगलै रजाके सरनियाँ चरनियाँपर लोटानि दिअ।

जब जे रजा सबटा हाल-खेरहा जनलक बुझलक त' ओकरा मनमे लगलै बढ़का धक्का। मन खुन्डी-खुन्डी टुटि फाटि गेलै।

रजाके टुटल मनमे लगलै विरोग। विरोगस' वैराग जनमलै।

से उ तखैनते अपन सबटा राजपाट, धनवित, कुलपैलबारके मोहमाया ठामे तियाइग जोगिया फकिर भ' गलै।

०००

तप सिधि

कोनो गाममे दू भांइ रहए। जेठका भाइ खेती-गिरहस्ती क'क' खूब आय आर्जन क' लेने रहै। छोटका भाइ जे रहए से, घर-परिवार, मतारि-बाप, सै-समाज सबके तियागिक', वनमे तप कर' चलि गेल रहए।

बहुत बरखके उपरान्त छोटका तपसी सिद्धि परापैत क'क' घरपर आएल। ओकरा अपना तपपर बड़ अभिमान रहैक। से उ अपन जेठका भाइके कहलक– देख', तों किछु नै क' सकला। घर-गिरहस्तीके मायामे तोहर जीवन अकारथ गेलो।

– त' तों एहन की क' लेले ? बढका भाइ जे ओकरा पुछलकै, त' उ ओकरा कहलके– हम योग-बल सिधि परापैत क' लेली। देखहो, बैठले-बैठले हम तपबले ओतका गाछमेस' फूल लाबि लेबै।

उ एहन ने मन्तर मारलक जे गाछमेस' फूल अपने मने अेकरा हाथमे चलि अएलै।

तब, ओकर जेठका भाइ कहलक जे देखही, हमहूँ बेठले-बैठले ओइ गाछमेके फूल हाथमे आनि लेबै।

उ अपन छोटका बेटाके बजएलक आ ओकरा बहलकै– बौआ रौ, ओइ गाछमेस' बहुते फूल लोढ़ने आब। आ कछु हमरा दिहा आ किछु कक्काके पएरपर चढ़ा दा !

ओकर छोटका बेटा दौगल-दौगल गेल आ बापके कहल लगले लपैकक' क' देलक।

तब जेठका, छोटकास' कहलकै जे तों अपना जे किछु कएले से अपने लेल,पुरुब जनमके लेल। अपन घर-परिवार ला', लोक-समाज ला' किछु नै कएले। जीवन जगत चलब' ला आब तोरा फेरु एहे लोकाचारी बातसब सिख' परतौ। हमर तप सबर्थे लोकसिध हए आ उत्तीमो हए।

०००

काबिल माखे कए ठाम

एकटा अलग डाढ़ि मूसरी रहए। उ अपनाके बड़ काविल बूझए। ओकरा होइक जे हम करैछी सेहे नीक छै।
ओकरा अपनापर बड़ गुमान रहै।

एक दिन उ गूंहमे लेटाइत रहए।
दाइमाइ देखलक त' नाक मूह मुइनक' थुक फेकैत बाजल– छीं-छीं, ई मूसरी त' गूंहमे लेटाइछै।
लोकके निछोहे गारि पढ़ैत मूस बाजल– गे बपखौकी भैया डाही ! हम त अपटन लगबैछी !
दोसर दिन मुसरी कांटमे ओंघराइत रहए। से दखि लोक कहलक– बाउ हौ बाउ ! मुसरी केना काँट मे ओंधराइछै ?
– रे पुत्त सरधुआ, मरकीबला ! ओकरो निछोहे होलिया देलक– हम त' गोदना गोदबै छी।

एहिना एक दिन मुसरी इनारमे खसि पड़ल। से देखि पैनभरनीसब अकचकाइत बाजल– दिदी गे दिदी, मुसरी पाइनमे केना खसि पड़लै।
– गे बपखौकी, सैंया सराधी। लोल पटपटबैत मुसरी उनटे ओकरे सबके गारिस' बिछ लेलकै– हम त चुभकन खेलै छी !

केहुनाक' ओकरा पाइनमेस' निकालि देलक। तब उ जा क' इनारपर बैस गेल।
– गे दाइ गे दाइ, दिदगैर मुसरी केना गबर भेल इनारपर बैसल है।
– गे डँरटुटी थोंथी बूढ़िया ! हम त' भैया बटिया जोहै छी !

ततबेमे एकटा कौआ आएल आ मुसरीके लोलमे ल'क' उड़ लागल।
लोकसब घोल कर' लागल– कौआ मुसरीके ने-ने जाइछै।
– रे मरकौआ टुनकीबला ! तों हमर फहट्ठा उड़िअएबे ? मुसरी ओहनो दशापर अपन थुथुरपनी नै छोड़लक आ नितराइते बाजल– अकाशमे उड़ी मजा मारैछी।

उ मजाकी मारत, कपार ! कौआ ओकरा मारि लोलस', मारि लोलस' लेहुलेहुआनक' काँचे खा' गेल।

०००

नित्य कर्म

प्राचीन कालमे एगो ऋषि रहथि। ऋषिक नाम कण्डु रहनि। कण्ड ऋषी वेद वेता रहथि। ई श्रेष्ठ मुनीश्वर गोमती नदीक किन्हेरपर घोर तप शुरु कएलनि।

ई समाचार जखन इन्द्रके भेटलनि त' हुनका पेटक पानि डोल लगलनि। आँखिमे निन्ने नै दिलमे चैन नै। ओम्हर इन्द्रके महा डर सन्हिया गेलनि कहू हमर इन्द्रासन नै छिना जाय।

इन्द्र प्रपंची रहथि। तपभंग कर'मे हुनकर नां बाजल रहनि। ईन्द्र ऋषिक तप भ्रष्ट कर लेल प्रमलोचा अप्सराके नियुक्त कएलनि। अप्सरा अति सुन्दर नवयौवना रहथि। ओ अप्सरा ऋषिके तप भंग करा विषय भोगमे डुबा देलकनि। कण्डु सय वर्षधरि अप्सरा सङे सुखभोग विलास' कएलनि।

इन्द्रक योजना सफल रहलनि।

अप्सराके स्वर्ग लोकक सोह, सतब' लगलनि। विषय भोगस' उचाट लागि गेल रहनि।

होइते हवाइते एकदिन प्रम्लोचा ऋषिस' स्वर्ग जाएके आज्ञा मङलथिन्ह। ऋषि रकटल रहै से, हिक,मन भरले ने रहनि। भोग विलासमे ऋषि ओकरा पँजियबैत आओर रह'लेल कहलथिन।

जहिया जहिया अप्सरा चलब कहनि, बारह बहन्ने ऋषि रोकि लथि। ऋषिक श्रापक भयस' अप्सरा थाकि हारिक', मनमारने भोगविलासमे ऋषिक सङ पुड़ल करए।

एक दिन कण्डु ऋषि जखन हबड़दोबर कुटीस' बाहर जे जाय लगला तैपर अप्सरा पूछलकनि जे कत जाइछी। ऐपर ऋषी अप्सराके कहलथि

- एह देखै नै छिऐ।

सूर्यास्त भ' गलै। संध्या उपासना कर'के' बेर छै। नित्य कर्म नै करबै, त' हमर नियमे भङ भ' जाएत।

ऐपर, अप्सराके बड़ आश्चर्य आ दुःख दुन्नू भेलनि।
मुनि अपने सुरमे रहथि। बजलाह अहां त' आइ प्राते अएलहुँ अछि। तैं हमर नित्यकर्म नै बुझल अछि। हम नित्यहुँ सूर्यक संध्या उपासना करैत छी।

तैपर जीउ जाँतिएक' अप्सरा बजलीह- हम प्राते त' अएलहुँ अबश्य, मुदा आइ नहि। हमरा अएला सयो बरखस' उपर भ' गेल।

ऋषिके पहिने त चौल-मजाक बुझएलनि। बादमे जखन सब खेरहा-बखेरा बुझमे अएलनि, त' झमाक' माथाहाथ द' बैसगेलथि।

०००

लेनी के देनी

कोनो गाममे एगो साधु रहैत रहइ। साधु गामस बहुत फटकी बीचला चौरीमे नान्हिएटा झोपड़ीए ओकर कुटी रहए। बवाजी माङि चाङिक' गुजर-बसर कएल करए।

भीख मङनी बवाजीक नितकर्मे बनिगेल रहय। बवाजीके एकटा पेट। बौह नै बेटी सुखले रोटी। ए घर ओइ घर। ऐ गाम, ओइ गाम जत' जे जेहे द' दए ख पी क' रामनाम मे मागन भ' जाय।

बवाजी एहिना मङैत चङैत एगो बुढ़िय ाक देहरी दुआरिपर गेल। बुढ़िया हड़हड़ही रहय। हड़हड़हीयोस' बेसी जरम जरी दुष्टाही रहए। मनेमन बुढ़िया विचारि लेलक जे नै रहत बाँस नै बाजत बौसली। बबेजीयाके मार खातीर बुढ़िया रोटीमे बिख ध' क' द' देलक।

रोटी ल'क' बाबाजी खुसीमगन भेल विदा भेल।

गरमीके महिना दिन दुपहरियाके समय। एकगोटि भुखले पियासले बवाजीके कुटीमे आएल। बावाजी दयालु रहइ। रोटी पानि ओकरा खाएलेल देलकै। बटोही रोटी खा' क' पानि जे पिलकनि ठामे टौरि गेल।

सौसे गाममे ई बात अगराही जकाँ पसरि गेलै।

कुटी दिस भरि गामक लोक देखलेल गेल। बुढ़ियो गेल। जा क' देखलक जे उ त' हमरे बेटा मरल परल है।

छाटि पीट पीट क' बुढ़िया ओङहरियो मारे आ घेउनो करे -कोन दुरमतिया लागल जे बवाजीके मार लेल रोटीमे विख ध' देली। बवाजीके काल हमरे बेटा पर वीसा गेल।

०००

बिआहस' विध भारी

एहिना कोनो गाँमे एगो पुरहितीया पंडिजी रहए। नां रहैन शिलानन्द झा। ओइ पंडिजीके बहुत ज्रजमैनका रहै। एसगारजान आ कए-कए गाममे जजमनिका से हुनका देहके अंटाइने नै रहैन।

एहिना एक राति उ पुरहित ऐ गामस' पुजाक' ओइ गाम जाइत रहए। उ असगैर रहए आ रातिबला बात रहै। बाटमे थोड़े दूर पड़ै जङल। दछिना लोभे पुरहित झटकारने ओ बाट धएने जएबो करए आ डरे चकुअएबो करए जे कहूँ कोनो भूत-प्रेत नै आबि जाय। आ तैपरस' मनेमन हनुमानो चलिसा पढ़ितो जाय।

से पुरहित जाइत जे रहए कि एगो बढ़का बाध बीच बाटपर आबिक' ठाढ़ भ' गेल आ बटघेरी क'क' पंडिजीके पुछलक– कत्त' जाइछी ?

बाधके देखते डरस' ओकरा तेरहो तरेगन बीत' लगलै। तैयो घेघियाइते बाजल– बिआह बरब'!

बिआहके नां सुनिते बघबा लागल ओइ ठाम लटारहम कर'– नै हम जो। हमरो बिआह करा दू! जाबे बिआह नै करा देब ताबे हम अहाँके जाही नै देब।

बिआह ला' एहन छिनर-भग्गल करैत देखक' खेलल बभनाके मनमेके डर निपत्ता भ' गेलै आ लागल एकरास' जान छोड़ाब'के धस धरब'– छोड़-छोड़, तोरा भुते बिआह कएल नै होतौ!

तैपर बघबा गभुआएल – से कथीला' यौ पंडिजी ?

मर तोरी भला करोके नैहतन – उ लागल बातके कतङर बनब- नै तोरा गेठीमे दाम हौ जे तों कनियाँ ला' नुआ-लहठी किन सकबही आ नै सेरे-सिदहा हौ जे तों भोज-भात करबही! दोसरमे तोरा बुझले नै हए जे बिआह स' एकर विध भारी होइछै। ई त' तोरासन सठिआएल पखठाएल बसके बात हब्बे नै करै ि

ई बात सुनिक' बघबा लागल पंडीजीके गोरधरिया कर'– पंडिजी यौ पंडिजी! केहुना हमरा बिआह करा' दिअ। अहाँ जे जेन्ना कहबै हम सब सहबै लहबै। महज बिआहटा हमरा कराइए दू।

तैपर बातके टोनियाँक' निकल' दुआरे उ पुरहितबा बाजल– सेहे, जीउ जाँतिक' सब अबधारि ले। आ कहबे त' ओकर भारी बिध अखैनतेस' शुरु क' दी। बघबा रहए बड़ खरनाएल खखाएल, से जे जेना कहत से कर' बघबा गछि लेलक।

बस पंडिजी की कएलक त' एकटा बढ़का बोरा अनलक आ कहलक ले तों पहिनका बिध ऐ बोड़ामे गँरिमुड़ीया ढुकिक' करत'। जखैनते बघबा ओइ बोरामे ढुकल कि चट्ट द' ओकर मुंह हनठिक' बान्हि देलक आ लागल उपरस' खूब जोड-जोड़स' डेङाक' ओधबाद कर'!

बपलहरि लैत बघबा छटपटाइत बाजल पंडिजी अहाँ त' हमरा जान मारै छी कि बिआह करबै छी ?

तैपर बभना बाजल नै रे तोरा बिआहके विध करबै छियौ आ हे देख बजबे आ कनबे त' हम तोरा ओहिना छोड़िक' चलि जएबो। तब जे कहबे जे बिआह नै भेल त' जनिहे अपन तों। धरखन्ने बधबा चुइयो शबद नै बाजल आ उ ओकरा अधकरुक' क' नदी कातमे ओङराक' अपन रस्ता नपलक।

बिहान भेने एगो बघिनियाँ ओइ नदीमे पानि पिअ' आ अहराके अहेरमे जे आएल आ बोरामे बान्हल अहराके जे खाएला' खोललक त' देखलक ओइ बघबाके!

एम्हर बघिनियाँके देखलक बधबा त' खुसीस' नेहाल भ' गेल। उ मनेमन पुरहितके धैनवाद दिअ लागल। भल भाइ रे ओकरे कारणे हमरा एत्त' बघिनियाँ कनियाँ पड़ि लागल!

ओकरास' बिआह क'क' उ दुनू परानी सुखस' रह' लागल।

०००

करमके खेल

एहिना एक दिन शिव-पार्वर्ती अकाशक बाट धएने संसारके भरमन करैत जाइत रहए । जाइत जे रहए से माता पावर्तीके नजैर एगो महा बिलटाउ पर पड़ि गेलैन । ओकरा देखिक' माताके बड़ दया-दरेग लागि गेलैन । बटधेरी क'क' भगवान शिवजीस' एकर दुख दूर क' देब लेल नेहोरा विनती कर' लगलखिन । हिनका बातपर भगवान कानेबात नै दैन । बड हठपिठ भलै । आब तिरिया चलितरमे पड़ला महादेव सेधिबुधि गेलनि हेराए । हारिक', नहियोमे हं कहीके पडलनि ।

तब की कएलनि भगवान त' ठामे धरतीपर उतरला आ लगले भेख बदलिक' कसगर अंजुरी सोनाके असरफी ल'जा'क' ओइ बिच्चे बाट प' ध' आएल जै बाट द'क' उ गैरबाहा बिलटाउ अबैत रहए । लिखल कंहू मेटल गेलैय ? दैबाक मारल डाङ कहूं केकरो बुते आइतैक रोकाएल ग' ? सेहे भेल्लै । जखैन जे उ ओइ धएल सोना असरफी लग जे आएल त' अपन दुनू आ.खि चौपटक' मुनिक' चल' लागल जे देखिऐ आनहर भेंम्हर लोक बिनु आंखिके केन्ना चलै है । आ जखैन उ आंखि खोललक तखैन उ भगवानक देल सोनाके नांधिक'पाड़ भ'गेल छल !

पावर्ती जी मुरछिक', हाथ मलिते रहि गेली ।

ooo

विधना लिखल मेटल नहि जाए

कोनो गाममे एगो दानी-धरमी लोक रहए । उ बड़ आस्तिक रहए । ओही गाममे एगो नास्तिको रहए ।उ एहन ने रहए जे कि कहू । धरम करमके,लिखल बदलके , करम भागके हुथियो लगाक' नै गुदानए । आस्तिक जे रहय से कहे - दिहें कपालं त' करिहें भूपालम । ओतहि नास्तिक कहय - दिहे.भूपालम त' करिहे क । ए बात ला एकरा सबमे बड़ घोंघाउज हुअए । आस्तिक अंटगर जुटगर रहए आ नास्तिकके ललाछुच्छी लागल रहनि । अकाश बाटे विध विधाता जे कतो जाइत रहए से उ दुन्नू एकरा सबहक बतकटौवलि सूनल । विध- विधातास' कहलकनि जे ई दुनू त' बड़ भारी बात कहइए । ऐ बातेक नङराक' छुरु । से नै करब त' हमरा अहाँके कानो माने - मतलबे नै रहि जाइत ।

सेहे भेलै । लगले विधाता अपन भेष बदलला आ एगो बढ़का टा' कदिमामे भूंर क' क' ओइमे अगमे असरफी भरि देलनि आअ ोकरा जहिनाके तहिना मूनिक लेने-लेने नास्तिके द'क' चलि आएल । कपाड़मे लिखल रहैन मोटका भोंथहा कलमस' नैत' भेटतनिके बडौड । ए ओइ कदिमाके नेने-नेने गेल ओकरे द' क' बाज जे चोते भारी याह टाके कदीमाके ल' क' हम की करब । एकरा अहीं ल' लू आ एकरा सांती एक दू सांझके सेर-सिदहा अहगरक' हमरा द दू ।

कदिमा ल' क' आस्तिक दु-तीन सांझके पेट खर्चा द' क' पठा देलक । कदीमा ल' क तरकारी ला' जे ओकरा भडलक त' ओइमेस झरझराक डलिया भरि सोनाक अगबे असर्फी झहड़ल । उ ओकरा पाबि उजबुज नेहाल भ' गेल । विधाता विधके कहलक-बुझलिए जेकरा विश्वासे नै होएते, जेकरा लिखले नै रहतै ओकरा कतबो ओगारिक' देबै तैयो एहिना पैठ-परापैत नै होएतै ।

ooo

बल स' बुइध बली

कानो गाममे एगो धक्कड़ पहलमान रहए । ओही गाममे एगो बनगेठबा रहए । बन्ठा बनगेठबा रहए त' भुट्ट तैयो बुद्धिमे विहारि रहए ।

पहलमानके बलके बड़ घमण्ड रहए । जते बलुआर रहए ओतबे मोट बुद्धिके रहए ।

पहलमनमा एक दिन कतौ जाइत रहए कि दैव संयोगमे ओकरा भेंट भ' गेल बन्ठास । बन्ठाके देखि ई हंसि देलक । बन्ठा पिताक' बाजल तों हँसले कथीला । तोरा बलके घमण्ड हौ त' बुद्धिमे लड़बे हमरास । हम बुद्धिमे बड़का छी। तोरा ऐ सहम हरा देवौ ।

पहलमान ताल ठोकैत फनकि क' बाजल- हो ले, लगले हाथ मिला ले । बदानि स्वीकार कर ।

बन्ठा वीर बंकरा पहलमाके कहलक तो ऐ रुमाल कें ऐ घरके ओइपार फेंक क' देखा तब बुझबौ ।

घर रहए उच्च गरइके । रुमाल रहए फुलसन हल्लुका । एकरा फेके त' उधियाइए जाए । फेकैत फेकैत पहलमान घमघमा गेल तैयो रुमाल फेकाएल नै ।

बनगेठबा बाजल - बस एतनेटा अदना कामे फुस्स ।

पहलमान हाथस' उ रुमाल लेलक । एगो ढेपा रुमालमे लेपटाक', जुमाक' फेकि देलकै, ओइपारक' ।

बन्ठा गेल जीत । पहलमान रहि गेल मुह तकिते ।

ooo

ठक-बक

एगो बौकला रहय। बौकला बूढ़ भ' गेल रहय। देहस' असक रहितो बहुत चलाक, गोहिया रहय।

एक दिन बौकला एगो बड़कीटा पोखरीक किन्हेरमे जाक भोकासी पारिक' कान लागल। पोखरीमेके माछ, घोङही,सितुआ, बेङ कोकरासब छगुनाएले आएल। सब बौकलास पूछलागल - की भेलै। के की कएलकै बौकलाके। को एहन गाढ़ विपति ऐ बुढ़ारीमे एकरा पैर गेलै से नै जानि।

बौकला भाभट लटारह पसारैत बाजल-विपैत हमरा पड़ल हए, की तोरासबके। सौंसे गामके लोक एहि पोखरीमे आगि लगाब बलाहै। तों सब त' ऐस ओरहा डाढ़ी भ' जएबे तहिला हमरा कुहेसा फटैय।

सुनिक' सबके जीउ सन्न भ' गेल। आब ? आब केना प्राण बाचत।

बौकला सबके चिन्तित देखि बाजल -हमरा अछैत तों सब नै अगुतो। तोरे सबके सङे ऐ पोखरीमे एते दिन खेपली। विपति घड़िमे तोहर सङ छोड़ि देबौ से हमर नेत नै कहैय। से नैत तों सब एकाएकी अबै जाइजो आ टेबाटेबी तोरा सबके एतस' बड़ी दूर बड़का दहमे छोड़ि छोड़ि अएबौ।

बौकलाके बकजालमे सब फँसि गेल। सब एकर बात पतियाक' उपरौंझ कर' लागल जे हम जाएब त, पहिने हमरा एतस' ल' चलू।

बौकलाके पौ बारह। एकरे बाट ई तकिते रहए।

तै दिनस' बौकला एकटा दूटाक' माछ सबके लोलियाक' पकड़ि लिए आ उड़ल उड़ल बड़का गाछ पर जा' जा' क' खा आबए। खा क' फेरु आबए आ पोखरीमे सबके सूनाक' बाजए हम ल' जाक' सबके दहमे ध' अएलिऐ।

ई किरदानी बहुत दिन धरि चलल।

खा' क' मोटा गेल बकुला।

एहिना एक दिन एगो कोकड़ा कहल कै बौकलाके आइ हमरा ल'चलू। बौकला कहलक चल। कोकराके लोलमे उठएलक आ लेने-लेने पहुँचल ओइ गाछपर। कोकराके बड़ डर भ' गेलै। आश्चर्य चकित होइत बाजल- मर बौकला भाइ एत कत।

जत सबके लौलिऐ। बौकला बाजल - मुरुख नहि तन पानिमे कहु आगि लगलैय। उत' हमर अन्हर भौली छलौय। हे या देखही काँटक ढेंरी सबके हम एहि आनि आनि खैलियै आ तोरों ओहिना खएबौ।

ई सुनिते चटस कोकरा पकड़लक चुट्टास ओकर कंठक संसरी। बौकला लाग छटपटाए। कतबो छोड़ छोड़ मरली कहए तैयो कोकरा ओकरा छोड़बे नै करए'।

कोकड़ा कहलक बौकलाके -चुपचाप चल ओत' जतस' हमरा अनने छले। मरता कि नै करता। उड़ल उड़ल आए घुमिके ओ पोखरीमे।

अधमौगति भ'गेल रहय बौकला, तैयो कोकड़ा ओकरा ओहिना नै छोड़लक।

पोखरीके सब माछके, घोङहा सितुआ सबके बजएलक। सबके सामनेमे ओकरा अपने मुहस सहकरबएलक जे हम ठीके ऐठामस माछ माछसबके ठकिठकि क' ल'जाक' बड़ी दूरक गाछपर जाक' खा खा लैत छलिऐ।

सुनिक सबके देह सिहरि गेलै। सब मार मारक बौकलापर दैगल।

कोकड़ा बौकलके भरि ठेहुना पानिमे ल' गेल आ टुभुक द' पानिमे पड़ाक' अपन जात त' बचएबे कएलक वाँकी जीवसबके प्राण सेहो बँचा देलक।

ooo

मेघा मिलान

कोनो वोनमे एक बड़ गंहीर खोला रहइ। खोला एहनमे ढांइ रहए ओइमे सबदिन एते नै पाइन चलए से पार केना केकरो बुताक बात नै रहए।

ए पार ओइ पार जाएला ओइमे एगो तारक पुल्ला रहए। पुल्ला रहए एक पेड़िया।

एक दिन ओइ पर दंक' एगो बड़का बाघ जाइत रहए। अधपेरियामे जे गेल त ओम्हरस' एगो दोसरो बाघ धाम्म द' जुम न।

बीचमे दुनूके भ' गेल बड़का मुसकिल। घुमके कानो आये उपाय नै रहय।

पहिलका बाघ दोसरका पर गुम्हरल - माने हट हमर वाट छोड़। हम पार उत्तरब।

दोसरो बाघ पहिलकापर हुमरल - तोरास हम की कम। हमरा डरे तों हट।

हुमरा हुमरीस कटांउझ हुअ लागल। लड़ि झगड़िक दुनू पुल परस' खसिक मरि गेल।

एक दिन एकटा बकरी ओहि पुलपर द' जे अदहापर गेल त' देखलक ओम्हरस दोसरो बकरी नहु-नहु अपनाके सम्हारने आबि रहल हए। दुनू मुहामुही तकलक। नजरिमे नजरि मिलाक अपनामे किछु विचारलक।

एकटा बकरी असनियाक' ठामे बैसि रहल। दोसर बकरि खूम सम्हरिक बैसलहा बकरीके पीठीपर द' क' पार उत्तरि गेल। बैठलहो बकरी गंओसँ उठल आ पुलापर उत्तरि गेल।

बाघ अरारि कएलक त' टिङ गेल बकरी मेघामिलानस' सहिलहिक' पार उत्तरल।

ooo

बीचमे पैसल हुड़ार

एगो बड़भारी बोन रहए । ओइमे एगो नढ़िया आ एगा नढ़िनियाँ रहैत रहए । नढ़िनियाँ गाभीन रहए । भल ईहे महिना ओकरा धीयापूता होनहारी रहए । नढ़िनियाँ अपन दिन-राति ला' भखए-तपए । से कथी ला' ? त' ओकरा अपन घरे नै रहए । घर बिनु ओकर अपन दिन अगम अपार लगै । भल भाइ रे, अपने त' कतौ रहिक' दिन गुदस क' लै छी, आब त' अपने बाल-बच्चा होएत से कत' रहत ?

नढ़िनियाँ नढ़ियाके सोनि खनिक' अपन घर-दुआर बनब'ला सब दिन निहोरा मिनती करै । कहियो काल ऐ बात ला' दुनूमे बतकटैबलो, मुंहचोथबलि भ' जाइक । ओकर मङछुआ रहै महा आहिदी, कोंढिहाठ । ओकरा कतनो मौगी चरिअबै, ओकरा बातके उ कोनो गरने-गुदान नै करै । नढ़िनियाँ बातके नढ़ेबा ऐ कानस' सूनए आ लगले ओइ कान द'क' निकालि दए । जौं-जौं नढ़िनियाँके समय पूड़ल जाए, तौ-तौ जे खौंझाए, तैपर नढ़िया बातके दहलियबैत केहुना ओकरा तोक-भरोस द'क' चुप्प क' दए– हँ हँ तौं निफिकिर रह न' । हम सब फुरा लेबै । ई ऐला कैला चिन्ता करै है । हमरा अछैतमे एकरा चिन्ता कर'के कोनो ओजहे नै हइ ।

से अहिना एक दिन नढ़िया, नढ़िनियाँके बीजुवनमे लेने-लेने गेलै आ बढ़का बघबाके माद देखाक' बजलै– हे ले, ईहे भेलौ तोहर घरके इन्तजाम-बात । अहीमे आइ दिनस' रह आ जतेक घर-घरुआरीकर'के होउक, से कर धर । सोइरी साँठ'के होउक, से तो. साँठ !

माद देखिक' डरे नढ़िनियाँके करेज पिरक पात जिका काँप' लगलै । उ भखए,केहन आहिदी जनमारास' जोड़-बन्हन भेल से नै जानि ? ई त' अपने ऐ आगिमे पकतै कि नै से दैवे जानए, महज ई हमरा मङनीमे बघबा हाथे मरबाएत । ओम्हर नढ़िया,नढिनियाँके लघोबलाय क'क' , घिसिया-तिरियाक' ओइ मादमे बैसा देलकै आ पोल्हाक' कानमे कहलै, हम जेना-जेना जे-जे सिखा दै छियौ तेना-तेना कएने जैहे ! कतनो ई ओकरा तोक-भरोस दैक, दैयो मौगियाके मन खातिर होएबे नै करै ।

ईसब अपनामे गुरमिन्टी करैत रहै, कि एहनेमे बघबा आएल । आएल त' देखलक अपना माद लग एगो ढिठगर नढियाके, मजास' बैठल ! ई एहन अनरितस' छगुनाएल,टुघरल अबैत जे रहए कि नढ़िया बघबाके सूनाक' बाजल– मर गे नढिनियाँ, गे बौआसब कथीला कनै हौ ? तैपर सिखाएल नढिनियाँ सेहो जोरेठोंठे बाजल– ई सब आइ बाघ खाएला कनै हइ ! कहै हइ, जे जब खएबै तब बाघेके माउस ! से ई दौगल-दौगल जाउक आ बौआ सबला' एगो बाघ मारने अबौक ।

झूठेके ताल तोड़ैत,नढ़िया अपन फड़हरी देखब' लागल– आंइ गे हमरे अछैतमे हमर बौआ बाघ ला' ललाएल, कानत गे ? तों बौआके भुलाक' तौले चुप्प करा' । आ हे देखही एगो बाघ एम्हरे अबै है, हम ओकरे मारिक' आनि दै छिऐ ।

ई बात सुनिते बघबाके सरद-गरम दुनू एक्के बेर चपि देलकै । आह ले,वाह ले बघबा जान बचाक' अपना जनिते भागल– लंक लागिक' !

बघबाके जान-बेजान अफचंख भेल, भगैत देखि एगो हुड़ार ओकर रस्ता रोकि पुछलकै– मर हो बघबा बाबा, तों एना डरे भागल पराएल कत' जाइ छा ? की भेलो ह' कैन से त' हमरा कहि सूनाब' ?

हकमैत बेदम भेल बघबा नढियाबला सबहे बात ओकरा कहि सूना देलकै आ ओत'स' अपन रस्ता नपैत बाजल– हम त' पहिनहि चेतली, जे केहुना जान बचाक' भगली । नै त' आइ मङनीमे नढिया हमरा मारि दित । बघबाके बात सूनिक' हुड़रबा लोटि-लोटिक' हँस' लागल आ बाजल– तों केहन अमरुख छा हौ ! हौ नढ़िया कहूँ बाघके मारलकै ग' ? एतेटाके उमेरियामे, एहन अनोन बात कतौ देखने सूनने छलहोग' ? तोरा उ मुरुख बनाक', तोहर घर हड़फि लेलको, से ने बूझ' ।

बघबा चकुआइते बाजल– अनका आनके हम की देखबै, हमरे सङे आइ ई बात भेल छलग' ! तैपर उ घैहर हुड़ार ओकरा तोक भरोस दैत बाजल– उ त' तोरा डेरा धमकाक' भगा देलकोग' । हम त' तोहर मारल सिकारमेस' गुजर गुजरान कएने छी । तै हितारे, तोरा खातिर ऐ बातमे हम सैयत देबौ । तों हमर बात मान' आ कलबल अपन घर घूरि जा' ।

कतबो निचा-उपरी, आगु-पाछुके बात सुझाक' हिम्मत जे दै तैयो ओकर अदकल मन मखबे नै करै । तब जे कि भेल त' उ ओकरा जोशिअबैत बाजल– चल', हम जाइछियो तोरा सङे, तबत' मन खातिर होतो ने ?

– नै रै, तों कहूँ जे हमरा छोड़िक' भागि परएबे तब ?

हुड़ार कहलकै नै भगबो आ नै बिसबास होइछो त' चल' दुन्नूगोटे घेंउटेमे घेंउट जोड़िक' । सेहे उसुन कएलक । एकटा बढ़काटाके वनलत्ती ओदारिक' पहिने अनलक । तब ओकरा निमन स' गुणेधि क' बँटलक । तब ओइ डोरीके एक ओरस' अपन आ दोसर ओरस' बघबाके घेंउट बन्हलक आ दुनू जे एम्हरे माहे चलल अबैत रहे, से अलगेस' नढ़ियाके देख लेलक ।

देखिते बूझि गेल जे आब ऐ बीचमे पैसल बढ़का हुड़ार । तैयो डेराएके कोनो बात नै आ लागल नढ़िनियाँके गदह कर'– गे आब कैला बौआसब कनै हौ गे ?

–नढ़िया ला' । नढिनियाँ लोहछले बाजल ।

तैपर नढिया कहलकै – गै हम कहने छलिऐ हुड़ारके जे जो आ केहुना कोनो बाघके बझएने आ ग' ! से देखही, हे वा उ एगो बाघके बन्हने अबै हइ ।

ई बात सूनिते, बघबाके बिसबास भ' गेलै जे ई हुड़ार हो नै हो ई ठिके हमरा जालमे फँसाक' मरबाएत ।

अदकल डेराएल बघबा लंक लागिक' ओत'स' भागल । पड़ाएल पूरातनिक' से लागल हुड़ार निमनस' घिसियाए ओम्हर डरे बघबा छड़पानपर छड़पान मारए आ एम्हर हुड़ार उठा-उठा पटकाए । घिसिया पटकाक' हुड़रबा लगले प्राण तियागि देलक ।

चलाकी बुधियारीस' नढ़िया याहटाके खुसफैल घर बनले बनाएल पएलक । ०००

सात धैला सोना

कोनो गाममे एगो छाटपैका धनीक रहए। अपना ला धनके अघानि नैहियो रहइन, खाए-पियके कटमटी नहियो रहइन तैयो धनला ओकर मन हैरदम छछयाएले रहए।

एहिना एक राति सपनामे देखलक जे एगो बड मन्तरीया देवदत ओकरा दर्शन द' क' ओकरा कहैय जै की सतल छे। फलना ठाम सात धैला सोना गाडल है से उखासि नै लाग'। एतबा बचनियां कहिक' देवदत अलोपित भ' जे गेल कि तखैनतेस' लागि गेल उडिबिरी। एक त' राति बला बात, दोमसमे अन्हार गज्ज रहए। एम्हर मनमे लागि गेल महा कछमछी। पाएल धन तहमे सोनाबला बात, सेहो मडनीमे तेकरा केना हाथस' जाए द। ओहपरस' कनीमनी सेहो नै। एक छाइर सतसत धैला। बाउ हौ बाउ , उ त'उहे भेल। ओकरा सनसन आनके कोन बात ऐ गाम गमैतके के कहए ,जिले राजमे एतेक एकठौहरी सोना ऐ देह धराक' नै देखने होएत आ नैदेखपाएत से त'पक्के रहै। ऐ सोना पा'क' उहे कथीला केउ धनीक धरोहिया, मालबर-असेसर धनीक भ' सकैत छल। से ओकरा लाबला' ओकरमन कछमछ करए। एकमन त' ई करए,ओतैह दोसर मन कहए आ दूर बंहीके सपना कह सांच भेलग'। अहिनामे धन सम्पति लोभे लोक नाहकमे जान गमबेय। कहबीमे नै हइ– बेसी लोभ बकलबे किनहां,आ तैला छनेमे परान ककोरबे लिनहां। मर तारी भलाकरोके,रे सपना कहूं कतौ सांच भेल ग' आ नै नांच मौगी आप भैल। ऐ सब पाछा जे छछआएल बफ़ जे उ गेल्ले घर हय।

आब त'ओकरा भ' गेल केकर दन पैर। नै लह बला, नै सह बला। जखैनते जे एक मन कहय जे मर तोरी भलाके झठके नेडरएने आ प्रेतके डेरएने पाइ। से नै त' जाक' देखी जे ई कहं सांचे त' नै हय। फेउन ओतैह दोसर मन मुरुछाक' महेभरे धांइसनी खसाक' हटका दए। कतनो अनठा पनठाक' सतए तैयो एकरा नीन्ह कैला होएतग'।

अहिना होइत हबाइत मे कै पहर बीत गेल। एम्हर मन रहै जे थीरे नै रहै। जखैन ते ई अनठाक' आंखि मनए की धम्मद' आंखि सोझा उहे सात धैला सोना चकमक नाच' लागए।

अन्तमे जमस बन्हलक, हाथमे लौठा कोदारि धएलक आ सरसराएले छने धडीमे ओतैह पहचल, जतके ठेकान पता ओइ सात धैल सोनाके, देवदतबा देने छल। कोदरि ल'क'कैनके जे माटि खनिक' हटएलक की कोदारिमे धैला ठेकल टन ! हांइ-हांइ जे ओतक्का माटि हटएलक त' दैखलक एक नै,द नै सात-सातटा भरल सोनाके धैला। बाउ हौबाउ, दैवरे दैव ,आब त'ओकर मन तर धरती उपर असमान टाके। कतबो जीउ जांतिक' मन थीर करए मन थीरे नै होए। उते अम्मार धन पा'क' उ की स की क' लेत तेकर तजात नै। ऐस' ओकर कैयक पस्ता नितरा अगधाक' खाएत।

आब भेटलेस'त' नै काज सिद्ध नै होतै।एकरा त' कोनो धरानी घर ढकएने पाएत। सोना भरल घैला रहए मारि भारी। असगैर टकसबो नै करए। आ एहन बात आनके जखैन ते कहत तखैन ते बेहाथ होअके परा अनदेशा। तैयो मारि मोटा एकटा कानो धरानीए उठएलक। हको दम भेल पहंचल धरक'। तेकर बाद बालेबच्चे लेदे गेदे गेल आ साते धैला सोना घरमे जगताक' नका धएलक।

हं हं जा, एकटा मइले बात ओतक्का कहके बिसराइए गेल। हमरा कहमे नान्हिटा भलि भ' गेल। जखैनता जे उ सातो धैला सोना खनिक' निकाललक की उपरस' एगो अकशवानी भेल – नीक जाहींत देखले आ हमर बात अखियाइसक' सनिले। ऐ सातोमेस' छौटा धैला नकसिक भरल हइ आ सातम कनछेपा अधखरुआ हइ। जाबैत धरि ई सातमो धैलाके सोना स' नै भरबे आ चाहबे जे एकरा अपन काजमे लगा भोग- विलास करब त' से नै भ'क' ठामे बिला जएतौ। तै बातके कइसक' गिरह पाइर ले।

कैनका ला सात-सात धैला सोना आएल हाथस जाय दैतैसे कोनो बात भेलै। से अबधाइरेक'अकशवानीके अढहैत शहकारि लेलक। मनेमने अपनाके अंटकारि भजारि लेलक जे कनीमनी घटल धैलाके कोनो नै कोनो धरानीए भरिएक' रहब।

बेर बिहान होइते आब ई लागल अधखरुआ धैलाके सोनास' भर'के जोगारमे। घरमे जे जतेक धएल धरोहरि रहए सोनाके गहना-गडिया तेकरा सबके ओहिमे धएलक। महखरमे जतेक चानीतानी रहए तेकरा सबके बेचि-बदलिक' ओहिमे पिअएलक। हाथमठीमे जे पाइकौरीरहइ तहसबके सोना कीनक' ओहिमे धएलक, तैयो धैला कनी घटिए रहि गेल।तब पैंचो उधार,ऋनो सबाइ ल'ल'क' ओइमे धरबाके धएलक तैयो धैलबा रहल अधखरुए। सोना त' ओहिना महग हौइछै,आ कतबो रुपैयाके सोना कीन त' उ त' होएत कम्मे। केहना कतौस' कतबो धरए, तैयो लगै जेना धैला दलीदरा खनल पैट होइक।
भर'के नामे नै लै।

गाम गमैतस',कर कटमैतास' नै जे एकर बडी पकलै,तब बीत-बीतक' खेत पथार बेचिक' सोना कीनक' धएलोपर जे धैला नै भरलै तब ई महमे दए धान त' फटि क' होए लावा। खनाइयो नै धसै करदबाके।रातिमे नै नीन्न होइक आ नै दिनमे चैन। हदासे त' महस' फफरी उडैन। आब धैला भर'के आढहैत केना परा होएत से किछ नै फराइन आ नै कोनो तेहन आगबैत बंचि गेल रहैन जेकरापर ई माथमरा फौद खेलैता।

एहिना एक राति उ एगो पडोसिया हितबन घरे भगवानक पजा देखला' गेल रहए। आतौह माथा हाथ ध'क' झखैत तपैत

रहए । भगवानो पजापर एकर मनचित लगबे नै करए । ओकरा पंजरामे बैठल लोक ओकर ऐबातके परेखि लेलक आ नहंए जोडस' ओकरा कानमे कहलक – लगैए अहांके सात धैला सोना हाथ लागल हए !

से सनिते ई चेहा उठल । मर हम बजली कौ नै । अपना घर अंङनामे हम अदमीके के कहए, एगोकार पंछीयोके नै जाए दैछीए । तै मे ई हमर गपत बात केना जानिगेल । से हनछिनाइते,बाजल – हे एहन उपर चौढबला बात हमरा लग नै बाज । हमरा कतस' आएत सात धैला सोना,से एहन देह दगध करबला अजोध बात फंसाब'ला बजैछा ।

आ धू मरदे ! हमर बात कैला तोरा कटाऔन लगै हओ ।

- ओकरा पोल्हबैत बाजल- हे हमरो तोरे नाहीत छप्पड फाडिक' ओहे सात धैला सोना हाथ लागल रहए आ देखते-देखते अपन सबट धन समपैत हाथो तरके गेल आ लातो तरके । तबह म कीकैलीत' हारि हीया ,मारि मोटा ओइ धैलबाके जतस'अननेरही ततै ल'क' गाडि अइली । ई एगो सीख हइ धन लोभी हहाएल खखाएल लोकेलेल ।

तखैन ते उ लगले हाथ,चढले चोट मनके कडाक' उठल आ सातके साते धैलाके लेने आतहि गेल जतस' एकरा अनने छल । ततै जा'क' गाडि आएल ।

तेकर बादस' निछुन निचेन भ'क' उ कमाए खाए लागल ।

०००

एकरा पाछू उ

एगो कुता रहए । ओकरा सङे एगो बिलाइ रहए । ओकरे सङे एगो विलाई रहए । ऐ दूनु जरे एकटा मूसो रहए । तीनूमे दोस्ती-महिमे रहए । तीनु मेद्यमिलास' रहैत रहए ।

एक दिन कुत्ता चलल टिरीथ-बिरीथ करला' । ओत' ढेर दिन लागके अनदेशास' ओकरा अपन जे जते कागज पतर रहए से सब बिलाइके जिम्मा द' निश्चिन्त भ' चलि गेल ।

बिलाइ कुत्ताके सब कागजके जुगताक' अमये रखने रहए । एकदिन ओकरो गाम गमैत जे जाएके भेलैत' उ ओकरा सबटा कागज पतर मूसके द' देलक । कागज सबके लेने लेने मूस बिल्लीके एकटा कोनामे राखि देलक । होइत हवाइत जाड़ा महिना आबि गेल । खलिए विल्लीमे मूसके जाढ़-ठाढ़ लाग लगलैसे मूस ओहि कागजेपतर सबके ओढना बिछौना बना सुखचैनस' रह लागल । मूस जाइत जखैन जखैन भुख लागए तखैन तखैन ओहि कागज सबके कटैर कुटैरक' खाए लागए ।

किछु दिनके वाद जे कुता घुमिफिरक' आएल त' विलाइस' अपन कागजपतर मङलक । विलाइ कुताके कहलक जे उत' हम मूसके धर'ला' देने छिऐ । चलू ओकरे लग' ओकरास' एखैनते मङादैछी । जखैन दूनू जे मुसा गुल आ कागजके दुदर्शा जे देखलक त' पिते आन्हर भेल कुता बुझलक नै सुझलक आ लागल विलाइके चौतार । भगैत पराइत विलाइयो लागल मूसके खेहटा कर' । जानप्राण अवगरहमे परल मूस मनेमन विचारे मर तोर के हमरा ई सब कैला खिन्हारैय । तहिएस' आइ धरि कुताविलाइके देखिते खिन्हार लगै अछि आ विलाइ मुसाके पच्छा झपट्टा मारि दौर लगैत अछि । ०००

मूसमे घुस

एगो मुसरी रहए । उ नामी बोड़िङ स्कूलमे पढ़ैत रहए । गर्मी छुट्टी ओकरा रहै । आम महिना रहै ओकर ममागाम लगेमे रहै । से दौगल मुसरी चलि गेल ममा गाम ।

खा पीक' मोटा सोंटाक' मौजमस्ती करैत ममागामस अपन गाम अबैत रहए । कि बीच बाटमे एकरा भेटि गेला बड़का बिलाइ ।

विलाइ देखिक ओकर सरद भ' गेलै । प्राण जाएमे आब कानो भाङर नै रहै । भागके कोनो दढ़ नै रहए आ महाकाल सोझा ठाढ़ । मनगर बिलाइ हुलसले बाजल -बौआरे हम तोरा खएबौ । मुसरी बड़ बुधियार रहए । अन्तकालमे बुद्धि तगाबके सोचि भाभट पसारलक - हं खालू खालू । ऐ रोगाह बेमरियाह जीनगीस- अकछा गेल छी । हमरो एडस रोग सन छतिके बेमारी भ' गेलहए । कैंसरस ग्रसीत छी । आरो कते ने कते रोगबलाए हमरा हए । हमहूँ मरही चाहै छी । भने हमरा अहां खालू । आ हें हमरा खएने अहांके रोग लाति जाएत आअ हू घिसरी काटिक' मरब त हमरा दोख नै देव ।

सुनिक बिलाइ छड़पिक दूर भागल नै एहन रोगीके हम नै खाएब । हमहूं रोगा क' मरि जाएब । एहन पटबला के ऐना खाक अपनामे रोग पटाएत ।

बिलाइ भागल जाए, मुस सटिआएल जाए । जते बिलाइ भागल जांए ओतबे मुस सटिआएल जाए । मुस कहए खों विलाइ- नै रौ भाइ । कालके गालमे के जाए ।

ई बड़ी काले चलल ।

होइते होइते मुसरीके एगो बिल्ली भेटि गेल । छड़पिक विल्लीमे ढुकि क' बाजल - हम त तोरा ठकि लेलियौ । हमरा कोनो रोग बलाए नै हए । हम त' जान बचबला' ऐना कहैत छलियौ । मुसरी मिम्मति आ बुधियारीस' कालक गालमेस' बचि गेल ।

०००

सोनाक खेती

कोनो गाममे चारिटा चोर रहए । चोर बड़ चतुर चलाक रहए । ओहि चोरबा सबके जोड़ा ओइ चौहद्दीमे एकहुटा नै रहए । ओइ परोपट्टामे त' लोक घरमे चोरी करबे करए । बादमे राजा घरमे सेहो चोरबा चोरी कर' लागल ।

सब दिनके परिकल चारु चोर, चोरी करिते काल सैनेपर पकड़ा गेल । नगर कोतबाल राजाके सिपहिया सब मिलिक' चोरबाके राजा सोझा बान्हिक' अनलक । राजा चारु चोरके नगरके बाहर ल' जा' क' सूलीपर चढ़ा दिअके आदेश देलक । ई राजा दण्ड सुना क' बाजल - सज्जन संवर्द्धन आ दुष्टके दमन इहे राज धरम हइ । आ एकरे बुद्धिमान लोक दण्डनीति कहैत छैक ।

फंसियारा सब, चारु चोरके लेने लेने नगरके बाहर गेला । एकाएकीक तीनटाके बेदर्दी भेल सुली चढ़ा देलक ।

बांकी रहल चोरबा मनेमन सोंचलक जे मरबाके त' हम मरबे करब । तैयो बंच'के जतन कर' चाहि । आ' कहूं सफल भेली तबत' प्राणो बंचि जाएत आ दुनियां भोग पाएब से हटले । चाहे रोगस' मरी चाहे राजदण्डस' लोक प्रतिकार क' सकए त' यमराजोस' बांचि सकैए ।

सेहो सोंचिक' चण्हलवासब लग लागल भाभट पसार' । छाती पीट-पीटक' लोटि-लोटिक मरलाहा चोरबा सबला' कान लागल । कानि-कानिक' ओकरा सबके सराप' लागल । पछताति सनके घेवना करैत बाजल – बाउ हौ बाउ' । दैव रे दैव । अन्हेर भ' गेलै हो दैव । हौ-हौ जल्दीस' राजाके बजाब' । बापरे वा' महा गुपुत विद्या एकरे सबके सङे केना चैल जएतैरे वा । जल्लाद सब सोंचए - मर तोरी भलाके, ई अपना लागि कनबो नै करैहै आ' मरलाहा ला' केना बफाइर तोड़ैए । से चुप करब' खातीर, ओइमेस' एकगोटी डपटिक' बाजल - हे हमरा लग' बेसी छग्गल भग्गल नै धर । बंच' के कोनो रकन्ना के बहन्ना धरबैछे, से बहन्ना हमरालग' नै चलतौ ।

चोरबा वाजल- नै हो दैव । हौ हमसब एगो बड़ भारी विद्या जनै छियै । ऐ बिद्यास' राजाके धनबीत, सुखसम्पतिके अम्मार लागि जएतै आ ई बात राजाके जे तों सब नै कहबही आ हमरा जे मारबे आ राजाके कही ई बात कहियो बारहो बरिसे सुनि बुझि लेलक । त' तोरा सबके त' मिरतु दण्ड देबाके देवे करतौ तोरा सबके वंशो निरवंश क'क' धनबीत कुर्ककी, गब्दी, लिलाम क' लेतौ ।

चोरवा अदकि गेल । अपन त' जेहन तेहन महज जाइ जनमलके मिरतु केकरो नै मंजुर केना होतै । केउ अपने समानके हत्या आ राजाके अधलाह केनाक' सोंचत से दौगल पड़ाएल गेल आ राजाके सवटा खेरहा कहि सुनएलक ।

राजा चोरवाके दरवार मङबएलक आ पुछलैक जे बाज तों कोन खेती जनै छे । चोरवा वाजल - राजा साहेब हम सोनाके खेती कर' जनै छी । सरिसो, मडुआके दानासनके सोनाके बीया बोएबै त' मटर, बदामटा'टा सोनाके फड़सब घौरछे के घौरछे फडतै सेहो महिने दू महिना भरिमे । मनीके त' बाते नै पुछू । तीन मने, चारि मने कट्ठा त' दैवो बाम भेलापर, धएले रहत ।

- आ कही जे से नै भेलै तब । राजा आंखि गुड़रलक ।

- आहि रे वा' । रे केकरा हिम्मत है, जे राजा सोझा झुठ बाजत ।

आ कहु हमर बात झूठ निकलल त' आखिए सोझा फांसी लटका देव ।

चोरवाके भूलि भुलैयामे राजा सङे, ओकर सब दरवारीयो सब फंसि गेल ।

लगले ताके सोनाके गलाक' सरिसोके दाना अते टा बीया बनाओल गेल । राजा फुलवड़िएमे खेत जोतिकोरी तैयार कएल गेल । उ बीया बोअला राजा चोरबाके कहलक । तै पर चोरवा उनटे लोहछिक' बाजल

- मर से रहितै त' हमही सोना खेती क' क' धनीक धरोहिया, असेसर मालवर नै बनि गेल रहिती । एकरा ओहे लोक बाओग क' सकैए, जे ऐ जीवनमे कहियो कथु चोरी नै कएने हुअए । सोनाके बीआ राजाके दैत चोरबा बाजल - एकरा अपने बाओग कएल जाओ ।

राजा साफ नसकार गेल । बाजल - हमत' धीयापुतामे बाबूके धोकरीमे स' कतेक ने कतेक बेरि ढौआ रुपैया चोरएने होएबै तेकरा ठेकान नै ।

मन्त्री सबके कहलक त' ओहो कहलक महराजे सनके हाल हमरो सबके हए । सिपाही आ कोत बालके कोन कथा रानीयो नेउरिनीया सब गछलक जे हम सबकै कै बेरि किछु मिछु , झुठ सांच, चोरी कएने छी ।

सबके सब जे पाछा हटिगेल तव चोरबा हपसिक' गेल आ धर्माधिकारीके हाथमे बीआ धरबैत बाजल जे एकरा अहीं हाथे शुभ शुभक नेमे निसठे बाओग कएल जाए ।

धर्माधिकारि महान्यायकर्ताके पद पर आसिन रहए सेहो छिहुलिक' कात लागल - नै रजे जिका हमहू छी । हमरा बुते ई सब नै होएत ।

तैपर चोरबा पेघराक बाजल -महाराज चोरी नामे एसगर हमरे फांसी कथीला हमरा सङे एकहि बेर सबके सब चढु ।

सब' ठठाक' हंसल ।

राजा चोरबाके माफे नै कएलक । ओकरा राजदरवारमे जोकरीयो रखैत बाजल जे ई बड़ हंसौर छौ आ बुधियार सेहो । एते दिन ई हारने चोरी करैत छल आ' आब अपन बुधि राजकाजमे लगाएत । ई देखा देलक जे राज विद्यास चोर विदा भारि होइत छैक ।

बीचमे पैसल हुडार

एगो नढिया रहए आ एगो नढिनीया रहए। नढिनीया रहए गाभीन। भल इहे महिना ओकरा ध्यापूता होनहरी रहए । आब नढिनीया सब दिन मःखए-तपए अपन ओकर दिन अगम अपार लागय। से कथीला त' समय लगचिया गेल रहए ।अ पेकरा अपन घर-दुआर रहबे नै करए। कत' बच्चा जन्माएत तेकर ठौर ठेकाने नै रहए।

सोनि खनिक' अपन घर बनब'ला' नढिनीया, नढेबाके सब दिन नेहोरा मिनती करए। नढेबा घमबे नै करए। उलहन उपराग दिअए तैयो नढेबा काने बात नै दए। जौं जौं नढिनीयाके समय समय पूरल जाए तौं तौं नढिनीया खौंझए। हं नढिया सब दिन नढिनीयाके ताक भरोस दए जे होतै किने। हमरो चिन्ता हए किन। हम सब इन्तजाम बात क' लेबै किन'। ई ऐला कैला चिन्ता करैहइ। ओमहर नढिनीया नै मूस देखए ने मूसके नङरी। ऐस' उ फुसलाएल बातपर मन खातीर करबे नै करए ।आहिदी आसकती नढियापरस' ओकर सबटा बिसबास उठि गेल रहए। उ त' सब दिन एतबे बातके रामाखटोला सूनए,पाबए किछु नइ।

से एक दिन नढिया , नढिनीयाके लेने लेने गेल आ एगो बढका बघबाके मादके माने बाघक सोनिके देखबैत बाजल जे ले इहे भेलौ इन्तजाम बात आ इहे भेलौ ताहर घर। अहीमे रह आ घर घरुआरिकर। सोइरीयो साठे उसार।

माददेखक' नढियाके करेज धकधक' धकधकक' कांप लागल उ सोंचए जे केहन अहिदी कढिबास' जोडबन्हन भेल जे मङनीएमे अपटी खेतमे प्राण एनामे चलि जाइत । तैसबला' उ लागल हनहन-पटपटक' छिरियाए। नढेबा ओकरा तोक भरोस दै जे हम छीनै। तों निश्चिन्त भ' क' निसफिकीर भ' क' रह। तोरा कथु नै होएतौ।

आ नढेबा नढ़िनीयाके कानमे किछु कहि सुना' चित भरि देलक आ ईहो कहलक जे हम जे जेना सिखा पढ़ा दिने छियौ तहिना खुब दिदगरि भेल रहिहे।

ई सब गुरमिन्टी करैते रहिए कि ओम्हरस' बघवा आएल। अपन माद लग ढिठगर नढियाके ई छगुनाएले नहुए नहुऐ अबैत जे रहए की नढिया बघबाके सूना क' बाजल – गे नढ़िनीया बौआ सब कैला कनै हौ त' नढिया खुब जोरस' लोहछिक बाजल जे बौआ कखैनस' एकरा कहै है जे एकटा बाघ मारिक आनिदिअ खाएला से जल्दीस' आनि दिऔ।

झुठेके तालतोड़ैत नढिया बाजल– तों बौआके झलाक' चुप करा आ देखही एकटा बाघबा एम्हरे अबै है। हम एकरे अखन मारिक' आनि दैत छिएउे। एहिस एकरा सबके अहगरस' जलखैयो भ' जएतै आ कलौ सेहो।

बघबाके सुनिते सरद-गरम दुनु एक्के बेर चपि देलकै। उ आहले-बाहले नङरी सुटका क' फुर्र द भागल । अफसियात भगैत पड़ाइत बघबा भागल जे जाइत रहए से बाट रोकैत एकटा हुड़बबा बाजल- आहिरे बा आहिरे बा' हौ हौ तों एना डेराएल पड़ाएल कैला जाइत छ' कि भेलैग।

हकमैत बेदमभेल बघबा नढियाके कहल बात सबटा सुनादेलैक आ' ओत स' डेग नपैत बाजल-हम त' पहिनहि चतली जे जान बचाक' भगली नै त' मङनीएमे नढ़िया हमरा आइ मारि दित।

बघबाके बात सुनिक' हुड़ारबा हंस लागल आ बाजल तों केहन अमरुख छा। दु हौ नढिया कहू बाघके मारलकैय से एहनो कतौं भेलैए कि कतौ देखनहु सुनने छहो।

बघबा चकुआइते बाजल हमरे सङे आइ ई बात हुअ लागल छल। तै पर तोक भरोस दैत हुड़ार बाजल

- उ तोरा डेरा धमकाक' भगा देलको ग' धुरिक जा ।अ पन बास धर ग' कतबो निच्चा-उप्पर, आउग-पाउछके बात सुझाक' हिम्मत जे हुडार देलक तैयो बघबा हिम्मत नै कएलक।

तब जे कि भेल त' हुडरबा – हौ मरदे तों एतेटाके बाघ भ'क' अदना फतिङा नढियास तों उनटे डेराइ कैला छ। तोरा विश्वास नै होइछो त' चल, हम चलैछियो तोरा सङे।

अहुपर बघबा नै जे घुमल तब हुड़रबा कहलक जे हमरा बात पर तोरा बिसबास जे नै होइछो त' चल' दुनु गोटे घेंउटमे घेउ.ट जोड़िक।

आ कि कएलक त' बढका टाके उदारके लत्तीके डोरी बाटिक' एकात बाघके गरामे बन्हलक आ दोसर कात' अपने गरामे ओइ डोरीके कसियाक' बन्हलक आ दुनु चलल नढिया लग टुमटुम करैत हुडार आगु आगु आ डेराएल चौंकल बाघ पाछु-पाछु चलल।

एम्हर नढिया दूरेस देखलक जे हमरा आ बाघबा बीचमे हुडार पैसल। आब रङमे भङ ई जरुर करत से नै त' हमहु एकरा बापक' वियाह आ पितियाके सगाइ नै देखैलीत' फेरु हमरे ना' की। से ऐबेर नढिया आउरसे चिकरीक' नढिनीयापर बाजल– मर गे बौआ सबके चुपाब' कहने छलियौसे कैलानै चुप्प करैलही। हम कहै छलियौय नै जे हुडरबाके कहने छलियै एगोबाघके फंसा फुसलाक' लाब' ला से देखही उ एगो बढका बाघके फुसलाक' लाब' लासे देखही उ एगो बढका बाघके गरामे डोरी बान्हिक केहन चिकन डोरिअएने अबै हइ।

अदकल बघबा जे ई सुनलक त' ओकरा पक्का बिसबास भ' गेलै जे हो नै हो ई हुड़रबा हमरा ठीके फसएने जान भरबला' नढिया लग लेने जाइए। से लंक लागिक', पुरातैनके भागल। बघबा हाइ-बफांइ दौगल भागल जाउ आ हुड़रबा घिसियाइत तिसियाइत मरले जारल जाए। केकिहारि कटैत हुड़रबा कतबो ओकरा किछु कह सुन चाहे निछोहे भगैत पडाइत बाघ एगौटा नै सुनलक।

छड़पैत भगैत बाघ विजुवनमे चलि गेल ताबत घसित घिसियाइत, चेहाइत हुडार लेहुलेहुआन भ'क'कखनीने मरि गेल।

चलाकी बुधियारीस नढिया, हुडरबाके मरबएलक। बाघके पड़एलक आ बनल बनाएल घरमे तहिएस' नढिया अपन बालबच्चा सङे सुखचैनस' जीअ लागल।

ooo

उलाएल बीआ बाओग

एगोटे बड़ सुधुवा रहए । साधुवा कि सोझमतिया आ इमानदार रहए । एकदिन ओ दूचारिगोटे मिलक' एकटा होटलमे आनन्दस' खनाइ खएलक ।

होटलके बील जे बूझब' गेल त' सब बिल बूझा देलक आ कनिक पाइ जे बकियौता रहि गेल, से पछाति बूझाएब कहिक' चलि गेल ।

काल क्रममे ओकरा विदेश कमाएलेल जाय पड़लै आ से उ कमाक' चारि बरिसपर आएल । आएल त' उ इमानदारीपूर्वक ओइ होटलबलाके पाइ बूझब' गेल । उ होटबलाके कहलकै जे हम समयपर अपनेके बाँकी बकियौता पाइ रहएसे नै बूझा सकली, से अखैनता अहाँ एकर सूधि-मूरि जोडिड्क' अपन ल' लिय । ओकरा उ इहो कहलक जे हम विदेशस'बहुते कमाक' आएल छी ।

होटलबला शहरीया दकचौकिया रहए । उ मनेमन सोंचलक जे आइ मूल्ला फँसल । इएह मौका हए खूब अहगरस' हँसोथा मार'के ।

होटलबला लागल ओकर हिसाब-किताब कर' आ बड़ी कालपर ओकरा कहलक जे तोरा सब मिलाक' दूहजार कतेदन पाइ लगतौ से तों कलमच हमर देनदारी चुको ।

उ अकचका गेल । कहलक जे मर एत्ते केना होएत । हमरा मन हए जे अहाँके सये रुपेया बाकी रहए । तेकर दूधि बड़बेसी त' एकसय, भ' जाउक । नै त' हे दुइए सय रहओ । एना लाखक लाख केना भ' जायत ।

– केना नै भ' जाएत । मानि ले जे एकसयमे तहिया दूटा मुर्गी भेल । दूटा उ मुर्गी मानि ले जे दिन दिन दू-दूटाक' अण्डा देलक । फेरु ओइसब अण्डामे स' बच्चा भेलै । फेरु उहो सब बच्चा अण्डा दैत गेल । साले सालके जोड़िक' हमरा त' एकलेखे चारिपाँच लाख रुपैया होएत । महज तों इमानदार छे, तै तोरा दू-अढाइए लाखमे उधार कर'के सोंचलियौ । से देख तों गेङ नै कर आ पाइ कलमच चुक्ता कर ।

एहिना घोल धमर्थनस' बात बहुत बढ़िगेल ।

होटलबला कहै जे हमर धर आ उ कहै जे ई नै होएत । एतेक पाइ हम कोन सपतके देब ।

अन्तमे लोक ओकरासबके मिलाब' फरिछाब'के हिसबस' एकटा पंचायतके दिन ध' देलकै ।

आब दुनूभरस' पंचसबके खोजी हुअलागल ।

उ जे खएने रहए, से बड़भारी फेतरजमे पड़िगेल रहए । आब ई बात ओकरा पड़ले पहाड़ भ' गेल रहए । से एहिना उ एगोटे लग गेलआ अपन दुखनामा सहित पंचैतीके बात सेहो कहलक । तैपर उ ओकरा कहलक जे तों चिन्ता नै कर आ हम जेना-जेना सिखा पढ़ा दैछियौ तेना-तेना करबबे त' कोनो घरडाँर नै लगतौ ।

आ उ ओकरा कानमे सबटा बात कहि देलक ।

जहिया पंचाइतके दिन रहै तहिया उ धड़फराएले गेल, महज बहुत अबेर क' । लोकसबके सङे ओत' उपस्थित पंचसब लुलु-थुथु करैत कहलक जे तों अतेक अबेर कत्त', कथीला' कएले ।

– से नइ बूझल गेलै, सरकार । हमरा खेतमे बीया बाओग कर'के छल । किछु लत्ती-फत्तीके बीआ सेहो रोप' छल । उ कनी ढिठेस' बाजल– से ओकरे भूंजै छलीऐ । उलबा-भूजबामे तैस' कने अबेर भ' गेल ।

ऐ बातपर सब ओकरा मार-मारक' छूटल– आइं रे तों हमरा भूल खाँउ बूझे छे जे उल्लू बबनएबे – हम सब कोनो खेती-पथारी नै कएने छी से ? बीआके कहँ लोक उला, भूंजीक' बाओग कएलकग' !

दोसरो लोकसब टोनपर टोन दिअ' लागल– आइं रे भूजल बीआ कहूँ जनमलैय ? इ केना जनमतै ?

जेना मारिक' तरकारी कएल मुर्गी अण्डापर अण्डा आ तैपरस' ओकर बच्चापर बच्चा होइत गेलै !

ओकर बात सूनिक' सिठीआ गेल आअ पनेसन मुंह ल'ल'क' घर घूरि गेल ।

पंचाएत ओहिना धएलके धएले रहि गेल ।

०००

ठीके, नीक समाज ओ नहि अछि, जकर अधिकाँश सदस्य नीके रहैत अछि । बरु ओ अछि जे अपन खराब सदस्य सबके प्रेमस' नीक बनब'मे सदिकाल प्रयत्नशील अछि ।

– डब्ल्यू. एच. आडेन

ऋण सधानी लगानी

कोनो गांमे दू परानी रहए। उसुन गरीबो रहए त' बनएने रहए। मेधा-मिलानबला हँसी-खुसी परिवार रहए।

मरदबा काल-कमौआ रहए। ओकर मौगी सेहो बड कौजली, चौतरी रहए। मौगीया घर-गिरहस्ती सङे मरदबाके खेती-गिर हस्तीमे सेहो खूब सङ पुरए।

ओइदिन मरदबा अपना खेतमे हरबाही करैत रहए। दिनक दोख कही आ कि घर-परिवारक लटखुटिया ओझरी, पैनपियाइमे अबेर भ' गेल रहै। जलखै पैनपियाइके बखत टरि-बहिक' कलौबेरके धक लागल जाइत रहैक। भूख-पियासस' मन मलैछ गेल होइतोमे, मन मारिक' हरबाही करैत रहए।

ताबेमे ओकर बौह, दलकल- दुलकल पैनपियाइ ल'क', धम द' पहुँचल आ हाँइ-हाँइक' मरदबाके हाथक' जलखै देलक।
खायस' पहिने, सोहर्दे मुँहे मौगीके पुछलक– लगानी लगएलकै ?
– हँ-हँ लगैलिऐ ! ई निश्चिन्तस' खाउक।
– ऋण सधएलकै ?
– हँ, ओहीमे एत्ते अबेर भ' गेलै।
एतबा बचनिञा सूनिक' मरदबा पुष्ट भेल आ तब मुहमे कौर देलक।

अपने बाते बेगरते, ओहि आरिपर द'क' राजा जाइत रहए। हरबहबाके ई बात सूनिक' ओकरा बड केनादुन लगलै। छगुनाएल खौंझाएल राजाके मनमे भसलब मारलकै– हो नै हो, ई बात फेकिक' हमर माखौल उड़बैय !

से, उ राजसाहेबी खुनुस' देखबैत, ओकरा सबके डँटलक– तो ई ऋण लगानी, सधानीके बात की बजले ? हमरा देखिक', बात फेंकिक' तों सब एना बजबे ? तोहर एहन डल ?

आहि रे बा, उ दुनू अकचका गेल। लौते लिबल बाजल– नै, हम अपनामे एहनने मगन छली। अपनेपर हमरासबके नजरियो नै गेलग'।

मौगिया कनेक करुआइएक' बाजल– मर गे, लोक अपनामे बजलोस' गेलै ?
– त' तों हमरालग बढ़ि-चढ़िक' बजबे ? राजा टहकल तेल जिका कड़कड़ाइत बाजल।
– नै, हमसब से त' नै बजलीग'। अहाँ त' अपने हमरासबके बीचमाँझमे हाथ धोक' पड़ल छी।
– छे गरीब गुरबा आ हमरा सुनाक' कैला बजले, ऋण लगानी सधानीके बात ?
– जा रे जा, त' ऐमे वेदमे छेद लाग'बला कहाँ कोनो बात भेलै ! हमरा घरमे, बुढ़बा-बुढ़िया मताइर-बाप हबे। कहू न' हँ !
राजा ओकरा बातके कोनो भरना नै देलक। अपन चुपे रहल।
– ओकरासबके खिअएनाइ-पिअएनाइके हम ऋण लगानी कहलिऐ।
फेरु राजा बाजल किछु नै महज ओकर बात सूनिक गभुआए– कहू गभनी त' नै करै हबे ?
– आ बाल-बच्चाके खिअएनाइ पिअएनाइ आगरिम दिन ला' ऋण लगानी नै त' आउर की भेल्लै ? ई त' अरबैसक' सबके गुन' बूझ'बला बात हइ।
तरेतर तबधल तरङल राजा पहिने त' ऐ तरखरमे रहे जे एकर ासबके दण्ड देब'। से आ ई बुद्ध गियानके बात सूनिक', ठामे शीतल शान्त होइत, ओतस' रस्ता नपलक।

०००

अगरजानी विद्या

कोनो नगर-राजमे एगो बडभारी साधु महात्मा रहए। उ गाम-बस्ती लगेके जङलमे रहैत रहए। उ दिनराति तप-तपसियामे लागल रहए। राति-दिनके ओकर ओतबे खेला, खेती रहै। ओकर गुजर गुजरान माङिए-चाङिक' चलै आ ई ओकर सब दिनमा ढाठी, उठौना रहइ।

उ करए कि त' अपन पूजा-पाठ, नित नेम-धरम क' ध' क', गाम-घरमे जा' माङि-चाङिक' आनए आ ओकरु रानि-दिन आए।

एहिना एक दिनके समैयामे, उ पूजा-पाठ, तप-धरम क'क' जे उठल, त' अपराहन भ' गेल रहै। रौद गुमारके समय रहै, से ओइ दिन भूखे ओकर मन मलैछ गेल रहै। उ हबर-दोबर माङ-चाङ ला' चल-चलाउए भल रहए, कि उपर गाछपर बैठल कौआ ओकरा देहेपर हगि ने दा'। ऐ अपैत बातस' उ पित्ते अङोर भ' गेल आ उपरीमे जे उ तवधले तकलकै, से कि कहू, उ कौआ त' ठामे जरिक' भसम भ' गेलै।

उ तपसी बबाजी जे ओइ कौआके भसम होइत देखलक त' ओकर पित्त छांइत भेबाके भेबे कएलै, ओकरा सोलहन्नी विसबास भ' गेलै जे हमर तप सिद्ध भ' गेल। आब हम जेकरापर नजैर गराक' तकबै उ ठामे जरिक' भसम न भ' जइहें !

ऐ बातके खुसीस' ओकर मन तल-बदल कर' लगलै। महज भूख ओमहर कहाँ मान'बला रहै। से उ चलल पहिने पेटक आगि छांति कर' ला', भिख माङ'।

आब त' उ चलए एक डेग त' ओकरा चलाइक तीन डेग आ किछुए धापमे उ एगोटेक अङना देहारिपर जा' क' लागल हकबाइ लिअ'– भिच्छा ! भिच्छा दू भिच्छा ! साधु महात्माके भिच्छा दू !

ओइ घरके घरैतीन घरेमेस', निमने नाहित, सोहर्दे मुहें साधुके कहलकै– हँ हँ दैछी ! कैनके बिलमू। एगो काजमे बाझल छी। से निछुन भ', लगले अहाँके भिख देब।

– कोन एहन काज हए जे अहाँके भिख दिअ'के पलखैत नै हए। नै दिअ'के हए त' कहि दू। हम चलब दोसर दुआरि।

– नै-नै, भीख देब कैला नै। आउर त' तेहन नै किछु। अखनी

हमर खामीन खाइ हइ। ओकरा खनाइपरस' उठ' दिऔ, तब हम अहींके काज क' देब।

– एह, साधुके एहन अपमान ! तपबलके घमण्डे उ तपसी तबधल रह,। से उ तबैसेक', तम-तमाएल तड़कल– अहाँके पुरुख हमरोस' महान ? ऐ नगर बस्तीमे टिप ध'क' एगो अहीं नै छै। अहाँ सन-सन चन्नी हजार हइ। तैंस', हम थुथुर नेहाय भ'क' अहाँके दुरापर थभकल नै रह'बला छी ! या हे, हम एत्तस' रस्ता नपैछी।

– त' हमहूँ कोनो गाछपरमे कौआ नै छी ! जे अहाँके तकिते, जरिक' भसम भ' जाएब !

आहि रे बा ! उ ओत्त'स' चलले जे रहए, से ई बात सुनितेमातर, जेना ओकरा हाथ-गोरमे याह मोटके हरी-बेढ़ ठोका गेलै ! ई बात ओइ साधुके छगुना देलकै। भल भाइ रे, जङलमेके कोआ भसम बला बात, ई केनाक' बुझलकै ? ई बात त' पले-घड़ी पहिनेके हइ आ ओत्त' त' कत्तौ केउ छबौ नै कएलै। आ नै हमहीं ई बात कहबे कइलिऐ ? तब इ केनाक' अगरजानी जानि गेलै ? के हए ई, आ कोन एहन देवता, धरम पूजै-अर्चै हए जे एहन अगरजानी विद्या जनै हबे ?

घमघमाएल, छगुनाएल उ बबाजी आब लागल ऐ बातके सोरस' पोर धरि बूझ'के जोगार धरब'।

उ उनटे ओइ घरैतिनके लागल नेहोरा मिनती सहित खुसामैद कर'– हे, अपने कोन एहन देवता पूजैछी ? की नेम धरम करैछी ? जे एहन अगरजानी विद्या जनैछी, से हमरा कहि सूनाउ। नै त' किछु बित जाएत, आब हम ऐ ठामस' टकसब नै !

– ऐमे बूझ'के कोन बढ़का बात हइ। उ अइ बातके सोझे सोझरबैत, सोझरफीं कहलकै– मर, नान्हिटाके हमरासबके घर-परिवार हए। खेती गिरहस्तीसनके दुखधनियाँमे लागल-बाझल छी। जे जतेक कन-साग जुरै बनै हबे, ओहिमे अपन गुजर-बसर करैछी। जे करै-धरै छी से निमने नाहित, आ से पूजा भावस' ! हम अपन पतिके भगमान मानैछी आ ओहे पुरुख हमर सबकिछु हए। हमर बात एतबे आ इहेसब, हमर देब-धरम हए। आउर नै किछु हम पूजी आ नै जानी।

– त' अहाँके गुरु के हए ? हुनकर नां पत्ता कहू। उ बबजिया मनेमने सोंचे जे ई जखैन एहन हइ, तब एकर गुरु गोंसांइ केहन नामी दामी होत्तै, से नै जानि ? औगताएल खरनाएल उ हकबाइ लिय लागल– कैन जल्दीस' हमरा ओकर नां ठेकान बतादू। ऐ बातपर हम अखैनते ओकरा दर्शन क' अबैछी।

– से हम हुनकर ना त' नै जनैछिऐ। महज एत्ते त' जनैछिऐ जे उ फलना शहरियाके बनियाँ बकाल हइ।

ऐ बातपर उ ओत्त'स' लतोपतो लंक लागिक' भागल।

अनधुन जाइत-जाइत जब जे उ ओइ शहर बीचमे गेल, कि एकगोटे लगाल ओकरा आबखुसीके गद्‌दह कर'– औ तपसी महराजी ! औ सुनू-सुनू ! हे औ, एम्हरे आउ, एम्हरे !

अपनामे उ अत्तेक ने मगन रहए, से नै पुछू। उ ओकरे गद्‌दह करैहइ से उ बुझबे नै करे।

एगो तेसरे गोटे ओकरा जब जे ओकर रस्ता रोकि क', कहलकै– बहीर छी जे नै सुनैछिऐ। एक जुगस' उ अहींके हल्ला कएने हए।

तब जाकरके ओकर ध्यान जे भङ भेलै। तैयो कि उ ओत्त' बिलमलै। नइ, जाइते-जाइते उ ओत्तैस' इशारा देलकै। माने, हमरा जायदू। नै रोकू। हम अखैन अपने बेगरते खरनाएले जाइछी।

– औ कत्त' जाइछी। उ मुसकिआइते बाजल– जेकरा ल' अहाँ जाइछी, से हमहीं छी। हमर चेलिन अहाँके हमरे ल' ने पठएने हबे ! तैं हम अहाँके शोर पारैछी।

बाउ हौ बाउ ! दैव रे दैव। उ तपसी बबजिया ओकरा देख-सुनि क' मुलकनके छगुनाए। हौ दैव जब जे ई एहन हइ, तब एकर गुरु की कहाँ होत्तै हौ भगमान ?

उ लगले ओकरा लग आएल आ तरद' ठरे प्रश्न कएलकै – हौ, भगमान ! हौ कोन देव पुरुख तों पूजैछा से हमरा तरक्का कहि दा ?

– हम बनियाँ बकाल छी। छोटमोट दोकान दौरी हबे। दोकनदारो ओकरा ओहने ठरे जवाव देलकै– ई दोकाने हमर भगमान हए आ बेओसे हमर धरम-करम लागी। एकरे हम पूजा भावस' नेमे-निष्ठे निमाहैत आएल छी। आउर हम दोसर किछु नै जानी।

– तब फेरु एहन अजबके तप-सिद्धि ! अकचकाएल बबाजी घचपचाएले ओकरास' पुछलकै– एहन सुन्नर अगरजानी विद्या ?

– हे, हम अहाँसुन जिका बहुते सास्तरस्त्र-पुराण नै जानी। हम बस एतबे जानी जे, जे करैछी से भगमानके पूजा मानि क'। ओत्तक्का भरिआएल बातके फरिछबैत साहुजी बाजल– हम केकरो ठकै-तकै नै छी। आ नै टालेटूल मारैछिऐ ! गिरहकटी गलाकटी हम सेहो नै करैछिऐ। हम केकरो, केहनो हरले-खगले बेरा-मोकाके निमाहि दैछिऐ। आस पूरब, बेगता निमाहबके, हम बड़कीगो बात बुझैछिऐ। हम घटा-नफाके लौल लापौरीमे नै पड़ैछी। हमरा सुख सन्तोख, भवंस-बरकैत भगमान अहीमे देने हए।

– अच्छा-अच्छा बुझली-बुझली। बड नीक, बड बढ़ियां। उ तपसी अपचंख होइत बाजल– ऐ बातपर अहाँ हमरा अप्पन गुरु गोंसाइके नां कैन कहू ?

–जा रे जा, से नै बुझलिऐ ? उहो बनियाँ सकपकाइते उनटा जवाब देलकै– मर हम नै हुनकर ना जनैछिऐ आ नै ओकर घरे देखल हबे। हमरा एतबे बुझल हए जे उ जातिके हलखोर छैथ आ काशीके बासी छथिन।

ऐ बातपर उ ओत्तस' राम-राम क' विदा भेल।

दू-दिने, चारि-दिने, रपटल बटिया जाइत-जाइत, जब जे उ काशीके सिमन्नेपर पुगल। कि नङधरङ एकगोटे दौड़ल ओकरा लग आएल आ कलजोरि ओकर रस्ता छेकि क' टाढ़ भ' गेल। तहूपर जे उ नै रुकल आ बाट काटिक' जाय जे लागल, तब उ अनचिन्हार लोक ओकरा लग गोहारि लगएलक– सरकार, घटी कुघटी छेमान करियौ। उ चेलिन आ उ बनियाँके गुरु हमहीं लागी। अपने हमरे उदेशमे जाइछिकी। ओकरा भरोस विसबास

दैत बाजल– से हम मनेमन कहली, बिन नां-टेकानके एत्तेटाके काशी बासमे हमरा कत्त' खोजता ? हमरा खोजमे हिनका बौआए नै पड़ै, तहीलागी हम अपने हिनका लग हाजिर छी । आब , हिनकर जे कहब होइ ।

– सब स' पहिने अहाँ हमरा ई त' कहू जे अहाँ एहन कोन देव धरम करैछी जे एहन अगरजानी विद्यामे पारंगत छी ?

– कहाँ कोनो ! सटकले सिठिआएल उ तपसी लग अरजी लगएलक– हम जाइतके हलखोर छी । आ हलखोरीए धन्धा क' क' हमर गुजर चलैहबे ! गुंह गिजबला हमरासन अधम लोक, कोन हाथे-बाटे देवता पितरके पूजबै ? अमनियाँ रहतै, तब न' देव-धरम केउ करतै !

– तब एत्ते जे अहाँके तप-सिधि हए से ?

ऐ बातपर हरखित नेहाल होइत पलटि जवाब देलकै– आतम बरहमके साछी-गुआही भैरक' कहै छी । हम सब अपन-अपन करमेके निछुन निगुत धरम मानैछिऐ ! आब देखियौ न', हलखोरीए हमर करम हबे । आ ई काशी परम पवित्तर धाम हइ । ऐ ठाम लोक जे हगि-मूतिक' निरघिन क' दैहै । तेकरा हम धरम बूझिक', निमन नाहित सफा क' दैछिऐ । देवस्थल कहूँ अपवित्तर रहलग' ? अपवितरे ने पाप अधरम हइ ? तैस' हम एकरा देव-धरम पूजा पाठ बूझिक', सफा सुथर क' दै छिऐ । भगमानपर हम एतबे लौ लगएने रहै छिऐ, जे हे भगमान ! सर-सफाइमे भुइलोस' चुक नै होए । एहन हमर करम बनएने रहिया !

मारिमोटा एकठौहरी एकमुहरी ज्ञान ओइ तपसीके तखैनते भ' गेलै । भक खुजलै आ घमण्ड छांति सेहो तखैनते भ' गेलै ।

विजु वनके आँखि औन्हमे जा क' तप कर'स' लाखदोब्बर उत्तीम, लोक कल्याणकारी जन-सेवा ! ०००

भुखनी देवी

एगो राजा रहए । उ राजा बडभारी दानी-धर्मी रहए । उ अपन सौंसे राजके लोकके अपने जाँघी जनमल पुत-करण जिका मानए । भरि देश-राजके लोक केना हँसी-खुसी रहतै, तेकरे उपाय उतजोगमे उ हैठबरदम लागल रहए ।

ओइ राजमे एगो भुखनी देवी रहै । उ मनुखमारि बड़ चंडालनी रहै । सबदिनक' उ जुआन-जहानके ताकि-हेरिक', कड़ैर-दड़ैरक' खा' जाइक । ऐस' ओतुका लोकमे बड़ दहसत हरकम्फ मचल रहै । लोके नै रातिमे निन अबै, आ नै दिनमे चैन । के कहिया निपुतर, राँड होतै, केकर जुआनी कहिया ढहतै, सेहो केउ नै जनै । तही दुआरे लोकमे भारी दहसत रहै ।

की भेलै, की नै, से नै जानि । महज किछु दिन किछु महिनास' ई उधबा उपदरब बन्न रहै ।

देश-दुनियाँके नीक-बेजाय हाल-समय जान'-बूझ' ला' राजा विकरमादित भेख बदैलक', ओइ राजा ओइठाम नोकरी कर' लागल । एमहर उ राजा दुनूहाथे दिनघटु गरीबके दान-धरमस' मदैत कर' लागल रहए । जे गरिब-गुरबा, भिख-भिखार एकबेर राजा ओइठाम जाय, से अनपुछ, नेहाल भ' क' लौटे ।

एकदिनके समेखिया एना भेलै जे राजा चुपेबाजे उठल आ गोर-बारिक', अपने दरबारस' चोराक', निकलल । राजाके एहन किरदानी चलेबापर बिकरमादितके बड़ केनादुन लगलै । आ से ओहो कलेबले ओकरा नेङरियाक' पछोर धएलक । भल भाइ रे, ई एना कैला चोरजिका जाइहबे ?

जाइत-जाइत उ राजा जंगलके एगो घनगर भौखरामे गेल । ओत्त' उ एगो खूम बढ़का ढंढोलबा देवीयाही कराहमे आबखुसी आपरुपी तेल खौलैत देखलक । ओत्त आन केकरो कोनो अमन-गमन नै रहै ।

राजा ओत' गेल आ छड़पिक' ओइ कराहीमे कुदि खसल ।

खौलल कराहीके टहकल तेलमे पड़िते मांतर उ राजा लालटुहटुह तराक' छता गेल ।

बाप रे बा, दैव रे दैव ! जिउ लप-लपबैत, अखनरी पेट पिटैत, महाकालसनके भुखनी देवी अएलै आ तरल राजाके कड़करा दड़दराक', मनस' खा गेलै ।

तब की भेलै, त' जब जे ओकर छुधा मेटा गेलै, तब उ अपन कनगुरिया औंरीस' अमरित निकालिक', ओकर हडी-गोरीपर छिटलकै । छिटते मातर राजा राम-रामक' पहिने जिका जीक' ठाढ़ भ' गेल ।

देवी ओकरा बौहते सोना-चानीसब द'क' कहलकै– जो आइके हमर भूख मेटा गेलौ ! आब, आइ हम तोरा राजके केकरो नै मारिक' खएबौ ।

सोना-चानीके मोटरी-पोटरी बान्हिक' राजा चलचलाउ भेबे कएल कि तैस' पहिने राजाके नोकर ओत्तस' निकलल आ दरबारमे आबि गबदी मारिक' परि रहल ।

रातिके ढरने, पौ-फटने, फरिछ ताबेमे भ' गेलै । नेहा-सोन्हाक' राजा अनरातस' जे बहराएल त' मारतेके गरीब-गुरबा बिलटल भुखलसब थहाथैह कएने रहै । देवी देल सबहे दरबजात राजा ओकरासबमे बाँटि देलकै ।

राजाके ई किरदानी सब दिनमा रहै ।

बिहौनकी रातिके भिनसरबा पहरमे आनेदिन जिका राजा ओहिना उठल आ गेल जङलमे त', नै ओत' उ देवीए रहै, आ नै उ कराह रहै । से देखिक' राजाके हदासे उड़ि गेलै ।

तै घड़ी ओकरा जे भकचोन्ही एहनक' ने लगलै से नै पुछ ।

आब नै ओकरा आउग-पाउछ किछु देखाइक, सुनाइक आ नै किछु कतौ कथू फुराइक । डरे देह सरदक ऐ दुआरे भ' गेलै, जे भुखनी देवी हमरा जे सोना-चानी नै देत त' हम केनाक' कत'स' दानपुन करबै ? आ केनाक' लोकके देवीस' बचएबै ?

झखैत तपैत, टुघरल मन्हुआएल राजा दरबार आएल आ खटबारि-पटबारिक' परि रहल ।

बिकरमादित चुप्पेबाजे राजा लग गेल आ जहिना जे मोटरी देवी लगस' अनैत छल से तहिनाइतेके मोटरी ओकरा लग राखि देलकै ।

से देखि राजा चेहा, चौंकल आ लपैकक' एकरादिआ जे

पुछलकै, त' उ ओकरा अपन आ देवीके किरदानी खेला कहि सुनएलकै ।

भेल की रहै त' सबदिनके खौलैत कराहीमे कुदनाइ आ देवीके ओकरा खनाइ बिरमादितके नीक नै लगलै । ऐस' ओकरा उड़िबिड़ी, कछमछी लागि गेलै ।

रातिमे कतनो केहुना उ किछु कएलकै, करोट उपाय क'क' थाकि गेलै से भेलै, तैं बिकरमादितके आँखिमे नीन नै भेलै ।

अन्हरौखे अधरतिएमे उठिक' बिकरमादित गेल आ निमनस' गमकौआ मसल्ला पिठार सौंसे देहमे हँसोथि लेलक आ ओइ खौलैत कराहीमे कूदि गेल ।

से जे उ भुखनी देवी जे खएलक त' ओकरा बडनीक लगलै ।

उ अपन कनगुरिया औंरीमेके अमरितस' ओकरा जिया देलकै । जित्तेमांतर उ फुरफुराक' उठे आ सुरफुराक' ओइ कराहीमे कुदि जाय ।

एना उ कतेक बेर कएलक तेकर तेजात नै । आ देवी ओकरा मनस' भछन करैत गेल ।

देवी एहन कहियो नै देखने सोचने छल । से उ फेउन जे कुदला' जे उधत भेल, कि देवी ओकरा हँटि बरजिक' मना क' देलकै ।

देवी कहलकै जे तों हमरा बड मन भैर देले । आब आउर नै । तोरास' हम बड परसन्न छियौ । हो तों जे मङबे से माङ । हम आइ ऐ ठाम सबटा पुरन करबौ ।

– सेहे, अपनामे अँटकारि भजकारि लू । ना-सकार नै जा पाएब ।

–हमरा ला कोनो केहनो बात बढका नै है ! जे जते माङके हउ, से एक्केबेर सोंचि साधिक' बाज । हम अरबैसक' पूरा करबौ ।

–हे देवी माता आइ दिनस' तों मनुख मारिक' खायके छुधा मेटा ला' । आ सब दिनक' राजाके दान धरमला' पहिनहि जिका सोना-चानी दैत रहो !

– जो अहिना होतौ ! आ से देवीके कहब कहियो बाम नै गेलै ।

तखैनते ओत्तस' उ देवी आ कराह कत' नै कत' बिलाक', अलोपित भ' गेलै । सबके सबदिनमा काल कस्ट खतम भ' गेलै ।

उज्जैनके शिप्रा नदीके किनहेरमे आइयो ओइ भुखनी देवीके मन्दिरमे पूजा होइ हइ । महज आब उ भुखनी नै, दुख-हरनी माइ हइ । सबके दुख हरन-भछन करैहइ, खोंइछा कोंइख भरै हइ ।

०००

गौ-दान आ करचीके मारि

एगो राजा रहए । उ बड दानी-धर्मी रहए । दान-पुनके उ बड निमन बात बूझ्एं । राजाके ऐ बातके, घैहर ठकबासब खूबक' टन्ना लुटए ।

से एक दिन एगो ठकबा बाभन आएल आ रजाके फुसलबैत कहलक– की कहू रजा साहेब ! तहन, स्वर्गमे त' अपनेके बाबू सुखिक' हरनठ भ' गेल हए । खाए बेतरे टगौ हबे ! हम त' जे हुनका देखलिऐअ से त' हुनकर हालैत देखल नै गेल । हुनकर त' हाड हिलैत छलैन ।

रजा अपन बापके दुखनामा सूनिक', मन अपचँख भ' गेल ।

राजा ओकरा कहलक जे अहाँ केना देखलिऐ ? तैपर पुरहित बातके भरियबैत बाजल– से की कहू, रजाजी ! अपनेके बूढा सरकार स्वर्गस' आएल छला आ सपनामे हमरा दर्शन देलैथ । ओ कहलैथ अपने ब्रह्मण छी । अपनेके बात मानत । से ओ अपने दिया, कहलैथ जे लगले अहाँ बच्छातरे बिआएल, सोनाके संवत्सर गाइ हमरा दान क' दियौ । जै स' हमरा खएने हुनका स्वर्गमे, अहगरस' गायक दूध पैठ हेतनि ।

राजाके कहूँ धनक दूख ! चट सोनराके बजाक', सोनाके बिआएल गाइ बनब'मे लगबा देलकै ।

राजाके एगो बड लक्का परेखी मन्तरी रहए । ओइ मन्तरीके ई बात अरधै नै । से, आब उ करो त' कि करो । राजाके हुकूम नै मानो, से नै भेलै आ मानै हबे त' ई ठकबा बाभन नाहकमे सोना ठकने जाइ हइ !

से की कहू । मन्त्रीयो रहे, खेलल खेलाड़ । उ की कएलक त' याह-याहके दूटा खूब नमहर काचँ करची कटबाक', मङबा लेलक । घूरौड़ क' ओकरा खूबक' धिपएलक आ खींचक' पाँच-सात करची बाभनके मारलक ।

कैनके मारिमे, मन्तरी ऐंचक' गैच गेल । दू-चारिए करचीमे, लर-ताङर भेल बाभन लोहछिक' बाजल– ई कोन चालि-चलेबा ? तहन ई की कएलौं ?

– से नै बूझ्ली पुढ़ीत भगमान ! बडका राजा साहेव हमरा सपनामे कहलग, दश-बारह करचीके मारि पठा देब ! से अहीके मारिक' पठा दैछी ।

– हे,बङौर ! एहनो कहू भेलैय ? मारि कहूं एना पठाओल गेलैए ? मारिस' स्वर्गमे हुनका कोन काम ? ई बात सोलहन्नी झूठ हए । एतस' पठाएल चीउज कहूँ स्वर्गमे गलैय ?

मन्त्री चट द' राजाके कहलक– सूनलिऐ सरकार ! एत'के पठाएल कहूँ ओत' गेलैय ? सोनाके गाइ दान सेहो ठकैती, ढकोशला हए ।

रजा ओत' सबटा खेला-बेला देखैत सूनैत रहए ।

चट सोनरबाके कहलक– बन्न कर, बन्न कर गाइ गढनी । ई मन्त्री हमर आँखि खोलि देलक । से नै त' ऐ बातके इनाममे एकरे एकटा सोनाके असर्फी किएक ने देल जाय ?

रजा हाथे सोनाके असर्फी इनाम पाबि उ मन्तरी गद-गद नेहाल भ' गेल ।

बोतलमे बन्न राछस

एकदिन एगोटे रस्ता धएने अहिना कतौ जाइत रहए । बाट' कातमे ओकरा अहिना एगो बोतल भेटलै । ओइ बोतलमे एगो राछस बन्न रहए । बोतलमेके राछस ओकरा मारतेके निहोरा, मिनती करै, ओइमेस' निकालि दिअ' ला' । उ ओकरा कहैक जे तों हमरा ऐमेस' निकालि देबे त' हम तोरा बहुते धन-वित द'क' धनीक बना देबौ !

बटोही लोभमे फँसिक' ओकरा निकालि देलक ।

आब ला' ! निकालबाके त' निकालि देलक । आब उ राछस भ' गेल ओकर जीउके काल । राछस लघोबलाय कएने कहै– ला' आब तोरा हम खइयौ !

तबत ' डरे ओकर पराना निकल' लगलै– नै-नै, धन-वित नै देबे त' नै दे । महज उपकारके बदलामे तों हमरा खो नै ।

ओमहर उ हकबाइ लेने रहै– जे कह, महज हम तोरा त' खएबे करबौ ।

दुनूमे बता-बातीस' घोल-घोड्हाउज होइते रहै, कि ओहि द'क' एगो बूढ़-ठेढ़ लोक आएल । उ जे पुछलकै जे ई बताबाती कथीके हइ ? त' राछस ओकरा कहलकै– ई हमर अहरा हए । एकरा हम खाय चाहै छी, त' बहन्ना बनबैय ।

बटोही कहए– नै-नै, ई झूठ बजैअ । ई बोतलमे बन्न छलै । से ई हमरा कहलक ओइमेस' निकाल' । त' हम एकरा निकालि देलिऐ । आब, तेकर सांती उन्टे, ई हमरे खाय चाहैहबे ।

बूढबा रहए बड घैहर, घटेनगर ।

आब उ लागल ताल तोड' । एक्के टाङपर नचैत आफन धून' लागल– नै-नै, ई झूठ बजै हए ! एहन भइए नै सकै है । राछस बोतलमे बन्न नै छलै होइत ? एत्तेटाके काया-मायाबला राछस, एतनीटाके बोतलमे बन्न भइए नै सकैअ ? ई हम पतिआइए नै सकैछी ।

ओमहर उ ओकरा आब खुसीके विसबास दिअबै– छलैय, रासछ ओइमे बन्न छलैग' ।

– नै, एतनीटा बोतलमे ओकर औंरीयो नै अंटतै, तब ऐमे उ केनाक' छलैअ ?

बतकटौवलि, मुंहचोथैवलिस' औगताक' राछसे कहलकै– हँ, छलीऐअ ! कथी है से ? राछसी जोगबले हम ओइमे छलीएग । हम एकरा झूठ-फुसके लोभ-लौल देखाक', छलस' केहुना निकलली । भुखे हमर आब पराना जाइअ' । हम त' एकरा खएबै ।

– नै रै, राछस ! तोंहू झूठ बजैछै ? लागल उ ओकरो पिनकाब'– तों फुसना छे । तोरा राछस विदिया अबिते नै होएतौ ?

– हमरे, हमर विदिया नै अबैय, से तों कहबे ? हमरा तों से कहबे ?

– एक बेर नै, कए बेर कहबौ । तों झूठा छे । झूठा छे । झूठा छे ? से नै छे त' तों हमरा ऐ बातलमे पैसक' देखा । तब पतिअएबौ ।

जोशाक' राछस ओइ बोतलमे जे पैसल, कि चट द' बूढ'बा ओइ मुन्ना ल'क' ओकरा बन्न क' देलक ।

तब उ ओइ बटोहीके मार-मार क' दौगल– रे सार, तों केहन छे ? रे, काल-कष्टके कहूँ लोक उसास कएलक' ?

उ दुनू बोतलके ल' जा क', खूब गंहीरमे गारि देलक आ अपन-अपन रस्ता नपलक ।

ooo

धोबिया आ गदहा

एगो धोयिबा रहए । ओकरा एगो गदहा रहै । उ एक दिन अपना ननटुनमा बेटाके ल'क' मेला देख' जाइत रहए । सङमे ओकर गदहा सेहो रहै ।

उ अपना बेटाके गदहापर चढएने रहए आ अपने पैदले चलल जाइत रहए ।

थोड़े दूर जे उ गेल त' एगोटे सलाहेमुहे दुसि देलकै– मर, मेला देख' जाएब त' मजा मारैत नै जाएब ? सेहे, देखही ऐ धोयिबाके । जब जे गदहा जाइते हइ आ ओइपर नान्हिटा चिलकोरबा बेटा है, त' उ ओइपर चढ़ि लित से नै ।

कएगोटे ई बात ओकरा कहलकै त' ओहो कि कएलक त' गदहापर चढि गेल ।

थोड़ेक दूर जे उ गेल त' लोक ओकरा लुलु-थुथु कर' लागल– ई बूढ़ शौख ने देखू । नान्हिटाके अबल-दुबल गदहापर केना दु-दू बापते चढ़ल है ?

ओकर बात सूनिक' धोयिबा अपन बेटाके गदहापरस' उतारि देलक आ अपने गदहापर चढ़ल, मजास' मेला चलल जाइत रहे ।

भल किछुए लग्गा आगू जे बढल कि लोक ओकरा मार-मार क' छुटल–है-है, रे तोरा कोनो गतरमे लाज लेहाज नै हौ ? देखित'-देखित', नान्हिटा बच्चा केना पएरे जाइछै आ ई अपने केना बूढ़ भ'क' गदहापर चढ़ल चलल जाइत छै ? धिक ऐ बूढारी शखस' ।

हारि-हुरिक' धोयिबा अपनो गदहापरस' उतरिक' दुनू बापते पएरे जे चलल जाइत रहए

बाटमेके किछु लोक ओकरा बड हुथलकै– आ धुत्त, मरदे कहाँके नैहतन । हौ एहन कोन बुधि गियान । हौ, जाएब मेला आ सङमे रहत गदहा, तैयो चलब पएरे ?

आब ओकरा बड मुश्कील भ' गेल ।

सबके सुनने, किछु कएने,ओकरा किछु नै बनए ।

अन्तमे उ दुनू बापते ओइ गदहेके बोकिक' मेला चलल जे जाइत रहे, त' किछु लोक ओकरा धिरकारैत बाजल– बुझाइए, धोबिया बताह त' ने भ' गेलैए । मर, ई कोन बात भेलै ? रे मेला जाएब त' गदहाके बोकिक' ? ई कोन भलमनसी ?

ताबेमे उ धोयिबा गदहाके बोने-बोकने एगो बढ़का जलधर नदीके पुल्लापर पहुँच गेल रहए । लोकके बात सुनिक' उ उबिया, औगता गेल रहए । से उ कि कएलक त' हारि-हुरिक' गदहेके पुलपरस' नदीमे भसा देलक । जो तोरी भला करोके नैहतन । नै रहत गदहा नै लोक टोकाचाली क' सलाह देत । ooo

२०६५साल पूस ४ गते जनकपुरधाममे, आयोजित मैथिली बाल संसदक सम्माननीय सभामुखद्वारा देल गेल भाषण

माननीय सांसद, समुपस्थित सहभागी विशेषज्ञ आ पत्रकार लोकनि !

परम ऐतिहासिक धटनाक रूपमे, अपूर्व बाललीलाक रूपमे आइ ई मैथिली बालसंसद- २०६५ संचालित भ' एकटा शुभ शुरूआत कएलक अछि आ एकर सभामुख बनबाक जे रोमांचक मौका हमरा भेटल ताहिलेल, हम नेहा, नेहाल छी । ई ने त' बालु-बालुक खेल थिक आ ने कनियाँ- पुतरा खेलनिहारक नेनपन । हम ध्यान आकृष्ट कराब' चाहब जे, नव नेपालक संरचना विकासक पुनित क्रममे एहि संसदीय अभ्यासके अदना लौल बुझब, सब अर्थे ऐतिहासिक भूलि होएत । आइ एतए, एकर सम्पूर्णताके देखैत,एकर गरिमा आ महिमाके अवधारि, एकरा उच्च मूल्यांकन करैत, बालसंसदीय अभ्यासस' उत्पन्न यावतो मुद्दा आ विषयसबके संवेगित भ,' एकरा गम्भीरता पूर्वक लैत, लिआब'के प्रतिवद्धताक सङ्गे कार्ययोजनात्मक ढंगस' एकर रुपान्तरण दिसि अग्रसर होएबाक जे तात्पर्यता व्यक्त कएल गेल अछि ओ महत्वपूर्ण आ उमेदगर अछि । बाल हितस' सम्बद्ध माननीय सभासद आ आदरणीय विशेषज्ञलोकनि द्वारा उठाएल गेल सार्वजनिक महत्वक मुद्दासब जाहि ढंगस,' साधि आ समधानिक' पास भेल अछि ओ विशिष्ट त' अछिए, एकर पेश हुअ'के ढंग आ पास कर'के छवि-छटा अनुकरणीय रहने, नैष्ठिक भावक, सुखद रहल ।

एहि सदनद्वारा पास भेल प्रस्तावसब तत्कालीन आ दीर्धकालीन महत्वक रहल अछि । एकरासबके योजनावद्ध रूपस' कार्यान्वयन करैत, लोक रूपान्तरित कए बालसंसारके समृद्ध आ नेहाल बनएबाक समय इएह अछि । हमर प्रवल आश-भरोस अछि जे बालसंसारस' आवद्ध सब पक्ष, चाहे ओ सरकार होथि वा प्रशासन,गाँउ विकास होए वा जिल्ला-विकास, वृहतर होथि वा दातृ संध-संस्थासब, स्कूल हुअए चाहे आनो-आन निकाय, सबके सब अपन-अपन स्तरस' लागि भीड़क' सुखद आ उमेदगर बालसंसार निमार्णमे अग्रसरता देखाबथि । सुखद सृजनात्म भविष्यक अरूदा, आरोग्य अहीपर निर्भर अछि, से हमरा लगैत अछि ।

उपलब्धिपूर्ण प्राप्तिक लेल पत्रकार-जगतक सक्रिय प्रतिवद्धता विश्वसनीय रहत, से सत्य-तथ्य अपना ठामपर महत्वपूर्ण अछिए, नेपाल मैथिली साहित्य परिषद, मिनाप, आकृति, रामानन्द युवा क्लव, सनसन प्रतिष्ठित संस्थासभक दायित्वपूर्ण अग्रसरता अपेक्षा सेहो कम नहि देखएमे अबैत अछि । आब आश करी जे बालसाहित्य लेखन आ प्रकाशनक क्रममे तीव्रता त' अएबे करतैक, बालरंगमंचमे सेहो उल्लेख्य गतिशीलता बढ़तैक । ईहो उमेदगर विश्वास करी जे जनकपुरमे, देखले दिनमे नामी-गरामी खेल मैदान आ ललितगर फमटगर बालपार्क निमार्ण दिसि भरिगर बजेटीय उपक्रम अगुअएतै ? एहि सबलेल हमसब नेना, नान्हिटा छी आ करतातै बला लेखे इसब अदना आ नान्हिटा बात अछि, कखन ? जखन प्रतिवद्धात्मक अनुष्ठानिक उठानि हुअए ।

सरकारी शिक्षानीति, शिक्षण पद्यति आ लक्ष्यके पुनर्मूल्यांकन करैत,अदृश्यरूपे उत्पन्न होइत शैक्षिक वर्ग भेदक अन्त आ विद्यार्थी जीवनस' अलोपित होइत जा' रहल प्राकृतिक सहजता ओ खेल-मनोरंजनके प्रतिष्ठापनमे विशेष ध्यान देथि ।

एहि रोमांचक आ आह्लादक बालसंसदस' अविर्भूत भ' विशेषज्ञलोकनि द्वारा जे जतबा प्रतिवद्धता आ कार्ययोजनासब व्यक्त कएल गेल अछि, बालसंसदक अटूट क्रमक सुसंचालनक संगहि एकरा सहयोग लेल अक्षय कोषक रूपमे एतए कएल गेल रकम प्रदान आ आनोआन स्रोत-साधन सबस' रकम जम्मा कराए अक्षय कोषक व्यवस्थाक संगहि विश्व बालसमाज विश्वास नामक 'स्थाक गठन कए संस्थागत रूपे आगू बढबाक अग्रसरता प्रति सेहो हम अविभुते छी ।

बालसंसदके परोक्ष आ प्रत्यक्ष रूपे सहयोग कएनिहार - श्रीरामानन्द युवा क्लव, जनकपुरधाम, स्कूल आ क्याम्पस, रेडियो -एफ.एम., टि.वि. आ पत्रपत्रिका, मैथिली साहित्यकार आ शुभेच्छुक सहभागी, विशेषज्ञ लोकनिमे आभार व्यक्त करैत, एकर संयोजक एवं योजनाकार प्रा. परमेश्वर कापड़िके विशेष रूपे हार्दिक आभार व्यक्त कर' चाहबन्हि । ई सदन अपन सम्पूर्ण गरिमा-महिमाके संग भविष्योमे चलैत रहत आ एकरा द्वारा उठाएल गेल मुद्दा आ उठल प्रश्नक उत्तर सम्बन्धित पक्षस' गम्भीरता माङ्गत आ समीक्षा करत, ताहू बातके स्मरण कराएब अपन धर्म बूझैत छी ।

जय मिथिला ! जय मैथिली !!

नेहा प्रियदर्शनी, सभामुख



विश्व बाल समाज - विश्वास

जनकपुरधाम, नेपाल

विश्वासक लक्षित लक्ष्य आ कार्यगत उद्देश्य प्राप्तिक लेल निम्नलिखित शाखागत कार्यक्रम अवहित अछि -

१. **फुलकोंढ़ी** - बाल सांस्कृतिक कार्यक्रम
 – गीत संगीत, नृत्य, प्रहसन, क्षणिका प्रदर्शन आदि

२. **भाउर-भंगिमा** – बाल नाटक ओ रंगमंच
- – नाट्य गतिविधिमे अग्रसर करैत ओकर पृष्टपोषण करब ।
- – बच्चाक जीवनके रचनात्मक दिशा आ अर्थ देबाक लक्ष्य बनौनाइ ।
- – बच्चाक व्यक्तित्व विकासक लेल, ओकर नैतिक शिक्षा, सामाजिक वा कोनो प्रकारक शिक्षाक लेल बाल नाटकके बहुत आकर्षक ओ सशक्त माध्यम बनाएब ।
- – अपन कला-संस्कृति करबैत जमीनस' जोड़ि लगाव उत्पन्न करब ।
- – रंग-कला दौत्य सम्वन्धक कारबक तत्व रहने एकरा राष्ट्रिय अन्तराष्ट्रिय प्रदर्शनक आधारके रूपमे अग्रसर करब ।
- – बाल नाटक एकान्तिक नइ, सामाजिक-सांस्कृतिक विद्या अछि, तकर भाववोध कराएब ।
- – बाल रंगमंचपर विचार ओ संवाद समारोहक हिस्साक रूपमे करब ।
- – नवोदित कलाकार सभक खोजीक' अपन कला कौशल प्रदर्शनक आधारभूत मंच देब ।
- – रंग-कलाके आकर्षक पूँजीके रूपमे विकसित करैत कला-बजारके आय-रोजगार, नाम आ दामस' जोडÞब ।
- – बालसंसारक पहचान आ स्वीकृतिके स्थापित करैत, उमेदगर बनाएब ।
- – बाल रंगमंच, बचपन आ बालसंसारके स्वस्थय विकासके लक्ष्य एवं कार्यदिशा निर्धारित करब ।
- – सम्वद्ध विभिन्न विषय एवं मुद्दा सबपर विशेषज्ञक विमर्श, कार्यशालाक आयोजन करब ।
- – बाल नाट्य प्रदर्शन, प्रतियोगिता आ बाल नाट्योत्सबक आयोजन करब ।

३. **बालसाहित्य समाज** – अटकन मटकन
- – बाल गीत, कथा गोष्ठी, लोककथा बाचन, प्रदर्शन, आदि ।
- – पूर्व बालक/बूढ़ बौआ कार्यक्रम अन्तर्गत श्रुति-स्मृति ओ लोककथा, बालखेलगीत, लोकगीतक प्रस्तुति ।

४. **रंग-शिविर/वर्कशप**

५. **नेचर-क्लव** –
 क. धा (धरती-आकाश)– आधुनिक पोखरिक व्यवस्था ओ संचालन सहित तैराकी, वाटर-जीमक प्रशिक्षण, प्रतियोगिता आ प्रतिभा विकास करब ।
 ख. दौड़-धुप– विभिन्न किसिम(मिटर)क दौड़ प्रशिक्षण आ प्राइक्टिस
 ग. खेलकूद– रंग-विरंगक परम्परागत आ आधुनिक बालखेलक व्यवस्थापन एवं संचालन ।
 घ. बहिन-धी–
 ङ. चुभुक
 च. योग,व्यायाम
 छ. एथलेटिक्स
 ज. योग-क्षेम

६. **बाल सांस्कृतिक समाज** – राग-रंग

७. **बाल संचार** – क्लीक डट कम/आवर स्पेश

८. **बाल दूतावास**

९ **मैथिली बाल संसद**

१० **नेचर क्लव**

०००